ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -26 | मार्च - II - 2024 | अंक - 24 | माउण्ट आबू | Rs.-12

समाज कल्याण हेतु श्रेष्ठ मुहिम के लिए संस्थान को साधुवाद : मुख्यमंत्री

राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन में 'स्वर्णिम राजस्थान' कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि हुए शामिल

- ब्रह्माकुमारीज़ ने स्वास्थ्य, शिक्षा, समृद्धि और संस्कृति के उत्कर्ष के लिए मुहिम छेड़ी है : मुख्यमंत्री
- ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से लगाई गई राजऋषि ग्राम प्रदर्शनी (गोकुल गांव, जल जन अभियान और श्री अन्न) का किया शुभारंभ
- शांतिवन में आयोजित भारतीय मजदूर संघ के 25वें वार्षिक अधिवेशन में भी हुए शामिल

शांतिवन। माननीय मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शांतिवन में आयोजित 'स्वर्णिम राजस्थान' कार्यक्रम में शिरकत की। डायमण्ड हॉल में सभा को सम्बोधित करते हुए माननीय मुख्यमंत्री ने कहा कि मेरा यहां कई बार आना हुआ है। यहां आकर मुझे सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। मन को शांति का अनुभव होता है। ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आध्यात्मिक संस्थाएं आगे आकर ग्रीन एनर्जी, यौगिक खेती, जैविक खेती के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। ऐसी संस्थाओं के काम करने से निश्चित रूप से हमारा देश आगे बढ़ेगा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने लोगों के स्वास्थ्य, शिक्षा, समृद्धि, संस्कृति में उत्कृष्टता के लिए मुहिम छेड़ी है। श्री अन्न को कैसे बचाया जा सकता है उसके लिए संस्था ने अभियान शुरु किया है। जल जन अभियान तथा नशा मुक्त अभियान के द्वारा समाज कल्याण के कार्यों के लिए संस्थान को साधुवाद।

कार्यक्रम में विशेष रूप से मंत्री ओटाराम देवासी, ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी मौजूद रहीं। मुख्यमंत्री शर्मा ने सम्बोधन में मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी को जीवन के 100 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई देते हुए कहा कि उस समय में जब संघर्ष भी रहा होगा, तब इतना बड़ा संगठन खड़ा करना और यहां तक लेकर आना बड़ी बात है। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ के जयपुर सबज़ोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी ने राजयोग का अभ्यास कराया। बीकानेर की ब्र.कु. कमल दीदी ने विचारों का महत्व विषय पर प्रकाश डाला। मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संचालन शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. शिविका बहन एवं वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सुधीर भाई ने किया।

मुख्यमंत्री ने संस्थान द्वारा आयोजित राजऋषि ग्राम प्रदर्शनी का किया उद्घाटन, कहा... आज इसकी ही ज़रूरत

उद्घाटन पश्चात् राजऋषि ग्राम प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए मुख्यमंत्री शर्मा, मंत्री ओटाराम देवासी व अन्य।

संस्थान द्वारा लगाई गई राजऋषि ग्राम प्रदर्शनी(गोकुल गांव-सर्वांगीण विकास अभियान, जल जन अभियान और श्रीअन्न मिलेट्स अभियान प्रदर्शनी) का मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुभारंभ कर अवलोकन किया और इसकी सराहना की।

- इस मौके पर मेडिकल विंग द्वारा वर्ष 2023-24 में की गई सेवाओं की सेवा रिपोर्ट माननीय मुख्यमंत्री को भेंट की गई।

मेडिकल विंग द्वारा वार्षिक सेवाओं की रिपोर्ट मुख्यमंत्री को देते हुए विंग के सचिव डॉ. ब्र.कु. बनारसी लाल शाह। साथ हैं ब्र.कु. मुन्नी दीदी, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई व ब्र.कु. प्रकाश भाई।

अन्य वक्ताओं ने कहा...

- स्वच्छ भारत मिशन राजस्थान के ब्रांड एम्बेसेडर एवं वन संरक्षण, महिला सशक्तिकरण में देशभर में ऐतिहासिक कार्य करने वाले जयपुर जिले की ग्राम पंचायत जाहोटा के सरपंच श्याम प्रताप राठौर ने कहा कि आज हमारा गांव जाहोटा देशभर में महिला सशक्तिरण के लिए जाना जाता है। हमने अपनी पंचायत में 23 हज़ार पेड़ लगाए हैं। 108 जल-संरक्षण के लिए तालाब, बांध आदि बनाए हैं।
- पुणे से आईं ग्रीन एनर्जी फाउंडेशन की फाउंडर शर्मिला ओसवाल ने कहा कि सामूहिक प्रयासों से हम राजस्थान को मिलेट्स के क्षेत्र में एक्सपोर्ट का हब बना सकते हैं।
- ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय भाई ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया और कहा कि आशा है कि आपके नेतृत्व में राजस्थान विकास की नई ऊँचाइयों को छुएगा। देश की समृद्धि और विकास में प्रदेश मॉडल बनेगा।

ब्र.कु. गंगाधर 'सूर्यदत्त जीवनगौरव पुरस्कार' से सम्मानित

पुणे-महा.। सूर्यदत्त एजुकेशन फाउंडेशन द्वारा संचालित सूर्यदत्त ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स की 26वीं वर्षगांठ (रजत जयंती) के अवसर पर सूर्यदत्त ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स, बावधन में 'सूर्यदत्त जीवनगौरव (लाइफटाइम अचीवमेंट) और सूर्यदत्त राष्ट्रीय पुरस्कार' वितरण समारोह का आयोजन हुआ। समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ ओमशान्ति मीडिया के संपादक डॉ. ब्र.कु. गंगाधर को मीडिया द्वारा समाजिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए अहिंसा विश्वभारती के संस्थापक आचार्य डॉ. लोकेश मुनिजी के हाथों 'सूर्यदत्त जीवनगौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजू, वरिष्ठ अभिनेता राजा मुराद, एमआईटी के डीन प्रो. डॉ. शरदचंद्र दराड़े, वरिष्ठ उद्यमी विठ्ठलशेठ मनियार, सूर्यदत्त के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. संजय बी. चोरड़िया, सूर्यदत्त की उपाध्यक्ष सुषमा चोरड़िया, प्रा. मंदार दिवाने, सलाहकार समिति के सदस्य जीवराज चोले आदि उपस्थित रहे। श्री राम जन्मभूमि न्यास,अयोध्या के कोषाध्यक्ष पूज्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरि महाराज को 'सूर्यरत्न-द सेंट ऑफ मॉडर्न इंडिया' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साथ ही विभिन्न क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए संगीतकार अनु मलिक, भारतीय शास्त्रीय संगीतकार उस्ताद तौफीक कुरेशी, सावित्रीबाई फुले पुणे यूनिवर्सिटी के साइंस एंड टेक्नोलॉजी पार्क के महानिदेशक डॉ. राजेंद्र जगदाले, लेफ्टिनेंट जनरल अशोक आंबरे, वाइस एडमिरल सतीश घोरमड़े, आध्यात्मिक गुरु गौर गोपालदास सहित अनेक व्यक्तियों को 'सूर्यदत्त जीवनगौरव पुरस्कार' व 'सूर्यदत्त राष्ट्रीय पुरस्कार' से सन्मानित किया गया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सभी को ईश्वरीय संदेश दिया गया। ब्र.कु.शारदा, डॉ. ब्र.कु.सुवर्णा, ब्र.कु. त्रिवेणी व डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके इस मौके पर मौजूद रहे।

मणिपुर इंटरनेशनल विश्वविद्यालय की ओर से...

शांतिवन के विशाल डायमण्ड हॉल में राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी को 'डॉक्टरेट' की उपाधि से नवाज़ा गया

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शांतिवन में ब्रह्माकुमारीज़ दिल्ली हरिनगर सबज़ोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी को मणिपुर इंटरनेशनल विश्वविद्यालय द्वारा 'डॉक्टरेट' की उपाधि प्रदान करते हुए कुलपति डॉ. हरिकुमार ने कहा कि आज आपको यह उपाधि देते हुए हम अत्यंत गर्व का अनुभव कर रहे हैं। आपके मार्गदर्शन में हज़ारों लोग व्यसन, बुराई छोड़कर अध्यात्म और राजयोग के मार्ग पर चल रहे हैं। जीवन पर्यंत आपके द्वारा की गई मानवता की सेवा और आध्यात्मिक जागृति के कार्यों को देखते हुए विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से नवाज़ा जा रहा है।

1956 में पहली बार बाबा से मिलीं

बता दें कि राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी का जन्म 1936 में अमृतसर में हुआ। 18 वर्ष की आयु में 1954 में संस्था के संपर्क में आईं। 1956 में संस्थापक ब्रह्मा बाबा और प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती(मम्मा) के अमृतसर आगमन पर पहली बार मिलना हुआ और तभी आपने ईश्वरीय सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करने का संकल्प कर लिया। आपके मार्गदर्शन में दिल्ली और हरियाणा में 130 से अधिक सेवाकेंद्र, उपसेवाकेंद्र, एक हज़ार से अधिक ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला संचालित हैं। 500 से अधिक ब्र.कु. भाई-बहनें समर्पित रूप से सेवा प्रदान कर रहे हैं।

संसार में रहें किन्तु... हंस की तरह

हमें संसार में रहना है हंस की तरह। आप हंस को देखिए, हंस का कर्त्तव्य क्या है, वो क्या करता है, उसे समझें। हमें परमात्मा ने टाइटल दिया है कि आप भी होली हंस की तरह विचरण करें। हंस का कर्त्तव्य ही है व्यर्थ और समर्थ को परखना। अर्थात् कंकड़ और रतन को अलग करना। उसी तरह होली हंस भी व्यर्थ और समर्थ को परखता और परिवर्तन करता है। चलते-चलते सारे दिन में कई ऐसी बातें हमारे सामने आती, कई ऐसे दृश्य भी दिखाई देते, व्यक्तियों से मिलना होता, सम्पर्क में आते और व्यर्थ कर्म भी दिखाई पड़ते। तो हमें इसी व्यर्थ को समर्थ कर समाप्त करना बहुत ज़रूरी है। नहीं तो व्यर्थ का किचड़ा जमा होते-होते उस दलदल का बोझ हमारे सिर पर बढ़ता रहेगा और हम दुर्बल होते रहेंगे। तब हम आने वाली बातों को, परिस्थितियों को और व्यर्थ को सही तरह से हैंडल करने में असक्षम होंगे। हमें हमेशा 'होली हंस' के टाइटल को स्मृति में रखते हुए सारे दिन में होने वाले व्यर्थ के बोझ से मुक्त रहना है। अगर किसी ने कुछ बोल दिया और हमें फीलिंग आ गई, उसी व्यर्थ की फीलिंग से आपको और फीलिंग आती रहेगी और व्यर्थ फीलिंग की पैदाइश फास्ट होती जाएगी। चाहे कर्म हो, चाहे ईर्ष्या भाव हो, चाहे नफरत हो, ये व्यर्थ की फीलिंग बहुत फास्ट होती है और हमें कमज़ोर करती है। और उसके आगे हम उस व्यर्थ को कभी सिद्ध करने के लिए बोलते हैं ना कि वो था ही झूठ और उस झूठ को फिर सिद्ध करने में और झूठ बोलते रहेंगे और उसके पीछे सारी एनर्जी हमारी खर्च होती जाती है। हम शक्तिहीन होते जाते हैं। सारे दिन में हमें ध्यान रखना होगा कि हम अपने अंदर क्या डाल रहे हैं, क्या भर रहे हैं और कौन-सी शक्ति जमा कर रहे हैं, क्योंकि वो शक्ति जैसी भी होगी वो हमारे कर्म में आएगी, हम रिस्पॉन्ड करेंगे, रिएक्ट करेंगे। हमें ध्यान रखना है कि ऐसी चीज़ों को होली हंस की स्मृति से समझना भी है, परखना भी है और उसे अलग भी करना है। जैसे आजकल के साइंस के साधनों में भी व्यर्थ को कार्य में लगाकर अच्छा बना देते हैं, कई वेस्ट चीज़ों को बेस्ट में परिवर्तन कर देते हैं। ये साइंस तो हमारी ही रचना है ना! मनुष्य ने ही साइंस बनाया है ना! जब हमारी रचना में इतनी शक्ति है, फास्ट परिवर्तन करती है, जैसे देखो, खाद होती है ना, तो खाद बुरी चीज़ है लेकिन पैदा क्या करती है? खाद गंदी है लेकिन बदबू को बदलकर खुशबूदार फूल पैदा करती है, सब्जियां पैदा करती है। ये भी तो रचना है ना। रचना में इतनी शक्ति है तो हम भी गाली देने वाले की गाली को फूल बनाकर धारण करें। वो गुस्सा करे, हम शांति का शीतल जल दें। ये परिवर्तन शक्ति हमें धारण करनी है। होली हंस का कर्त्तव्य ही है खराब को श्रेष्ठ बनाना। आप कहेंगे कि ऐसा कैसे हो सकता है! उसने खराब ही बोला ना, खराब बात कही और बहुत खराब कही। लेकिन खराब को ही तो अच्छा बनाना है ना, अच्छे को तो अच्छा नहीं बनाना है। जब अच्छा नहीं है तभी तो अच्छे की ज़रूरत होती है। अच्छा ही है तो अच्छा बनाने की क्या ज़रूरत! तो शक्तिशाली बनकर खराब को अच्छा बनाने की शक्ति धारण करनी है। अच्छा बनाने के कर्त्तव्य को हमेशा याद रखकर, ये वस्त्र पहनकर ही हमें विचरण करना है। बुरी बात या वायुमण्डल का प्रभाव हमारे ऊपर पड़ जाये, ये होली हंस का लक्षण तो नहीं हुआ ना!

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

कैसा भी वातावरण हो, कैसी भी वृत्ति हो, कैसी भी वाणी हो, कैसी भी दृष्टि हो, लेकिन होली हंस सबको होली बना देता है। सदा हमारे में ये पॉवर रहे और सदा ऐसे तीव्र गति का परिवर्तन करने की विधि आ जाये तो हम क्या बन जायेंगे, मालूम है? पवित्रता का फरिश्ता। पवित्रता का फरिश्ता का मतलब ही है किसी के प्रभाव में न आना। अपना कार्य किया और वह चला। फरिश्ता कभी किसी के वश नहीं होता। न विघ्न के, न व्यक्ति के। फरिश्ता यानी सेवा की और न्यारा। ऐसी स्थिति हमें सदा मेंटेन रखनी है। तो अपने को चेक करना है, होली हंस बने हैं या बन रहे हैं? कब तक बनेंगे? कोई टाइम की हद भी है या नहीं है? कितने साल लगेंगे? ऐसे अपने आप से बातें कर अपने कर्त्तव्य के बोध को स्पष्ट भी करना, साथ-साथ अपनाना भी है और दृढ़ भी करना है। ऐसा तीव्र पुरुषार्थी बनना है।

जब योग की अनुभूति गहरी हो... तब शक्तियां मिलें

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बांधेलियों को बाबा से मिलने की आकर्षण होती कि कहाँ छुट्टी मिले तो हम बाबा से, भगवान से मिलने के लिए भागूँ। जैसे दुःख में सिमरण सब करे वैसे बांधेलियों पर बन्धन है तो वह जास्ती याद करती हैं।

हमने देखा है जिनको इस याद का, योग का अनुभव है, सहज ही दुनिया की सर्व बातों से उनकी बुद्धि हट जाती है और ऐसी प्रैक्टिस करने वालों की दृष्टि में शक्ति रहती है क्योंकि वृत्ति में एक बाबा ही रहता। स्वयं को बाबा के साथ कम्बाइन्ड देखते। जब तक इस योग की अनुभूति गहरी नहीं करेंगे तब तक शक्तियां नहीं मिलेंगी। जो भी पॉवर्स हैं वो इस योग साधना से मिलती हैं। इस साधना से माया पर विजयी बन सकते हैं। ज्ञान हमारी पढ़ाई है, जिस पढ़ाई को बुद्धि से धारण करना है। और जितनी ज्ञान की गहरी प्वाइन्ट्स बुद्धि में धारण होगी उतना ही बुद्धि फिर दिल से बाबा की शुक्रिया का गीत गायेगी। और जितना याद की यात्रा करेंगे उतना अपने को वरदानों से भरपूर अनुभव करेंगे। क्योंकि यह याद ही हमें वरदाता बाप से वरदान दिलाती, इसी से समीप हो जाते हैं। फिर दिल से गीत निकलता बाबा आपको पाकर हमने तो जहां पा लिया। ऐसी लगन वाले ही सच्चे आशिक बन माशुक की याद में रहते हैं।

हर एक हर घंटे, पाँच मिनट भी साइलेन्स की अनुभूति करे तो अनेक बातों पर विजय पाने की शक्ति आयेगी, जो बाबा कहते माया पर विजय पहनो, वह विजय तब होगी जब ज्ञान सहित योग में रहो। फिर माया नहीं आयेगी, बुद्धि यहाँ-वहाँ नहीं जायेगी। मुरली ज्ञान में पक्का कराती परन्तु सवेरे का योग अशरीरी बनने में बहुत बड़ा बल देता है इसलिए योग में सचमुच यह अनुभव हो जैसे हम इस देह से उड़कर अपने अव्यक्त वतन में बाबा के पास पहुंच गये हैं।

निराकारी दुनिया तो परमधाम है लेकिन अव्यक्त वतन, सूक्ष्म वतन यह हमारे संगम की विशेषता है। उसका हमें हरेक को अनुभव चाहिए, जहाँ से बाबा हमें मिलने आते हैं। तो इसके लिए जितनी-जितनी बुद्धि शुद्ध बनेगी, बाहर की बातों से अन्तर्मुख होगी, उतना ही बाबा की आकर्षण रहेगी। सचमुच हमें भगवान की आकर्षण हो रही है - यह अनुभव चाहिए। जैसे कई बार बाबा कहते कि बांधेलियों को बाबा से मिलने की आकर्षण होती कि कहाँ छुट्टी मिले तो हम बाबा से, भगवान से मिलने के लिए भागूँ। जैसे दुःख में सिमरण सब करे वैसे बांधेलियों पर बन्धन है तो वह जास्ती याद करती हैं, आप लोग छुटेले हैं तो मस्त रहते हैं। अच्छा है मौज है, मस्त रहते, यह भले अच्छा है लेकिन लगन एक अलग चीज़ है। वह ऐसी लगन होती जो रात को नींद भी उड़ जाती और मन कहता बाबा के पास जाके बाबा से रूहरिहान करते रहें। कैसे बाबा लाइट के वतन में हमें लाइट रूप में ले जाता। खुद भी लाइट रूप बन जाओ तो बाबा लाइट रूप बन आप लोगों से मिलन मनावे। यही है रूहानियत की यात्रा। तो सभी को ऐसी रूहानी यात्रा की रूचि रख बाबा से मिलन की अनुभूति करते रहना है।

सदा बाबा की छत्रछाया के नीचे रहो तो रक्षक बाबा सदा रक्षा करता रहेगा। बाबा कहता बच्चे, तुम मेरी नज़रों में छिप जाओ। बाबा की मुरली में है वो मेरे मीठे-मीठे नूरे रत्नों, यह किसने बोला? नूर माना आँखें। तो हम बाबा के नयनों के नूर हैं। इससे बड़ा भाग्य और क्या चाहिए! बाबा ने अपनी नज़रों में हमें छिपा दिया है। बाकी तो दुनिया के खेल हैं, चाहे बीमारी है, आना है - जाना है, सर्विस करो उसमें आंधी भी आती, तूफान भी आते- यह वह सब होता परन्तु अपनी स्थिति स्थिर चाहिए।

जिसमें नम्रता, धैर्यता और सच्चाई है उनका योग अच्छा लगता

राजयोगिनी दादी जानकी जी

हम बाबा के बच्चे ईश्वरीय सन्तान, ईश्वरीय फैमिली हैं। अपने को आत्मा समझना, देह के भान से परे रहना है, यह है पढ़ाई। यह भी वन्डरफुल बात है कि हम सब एक के बच्चे हैं। किसी का भी माँ-बाप दूसरा नहीं है। हम सब एक बाप के बच्चे हैं। वैसे लौकिक में कहते हैं एक ब्लड है। फिर भाई-बहन का आपस में प्यार न हो तो क्या कहा जायेगा? रूहानी बच्चे हो, रूहों को कहा है तुम मेरे बच्चे हो। आत्मा फिर कहती है बाबा मैं आपका बच्चा हूँ। बच्चे-बच्चे कहके बाबा ने ब्राह्मण बना दिया। एडॉप्ट करके कहा तुम ब्राह्मण कुल के हो। यह अन्दर से संस्कारों में नशा हो, स्मृति हो।

देखा गया है, नुमाशाम के समय किसी को भी योग में नींद नहीं आती है। तो यह नियम भी हमारा पक्का हो, खींच हो। इधर-उधर घूमने के बजाय, संगठन में आकर याद में बैठ जायें। संगठन के योग का सुख बहुत है। इसमें अलेबेले न हों। इस नियम में जो फायदा है, वह बहुत मदद करता है। अमृतवेले भी घड़ी सोने नहीं देगी। दिन में कार्य करते भी डिटैच रहकर काम करेंगे तो थकावट नहीं होगी। थकते वह हैं जिनमें नम्रता, धैर्यता की कमी है। जो नम्रचित्त हैं उनके अनेक सहयोगी बन जाते हैं। जो धैर्यता और प्रेम से काम करते हैं, उन्हें कोई भी काम बड़ा नहीं लगता। उनका योग भी अच्छा होता है। जिसमें नम्रता की कमी है, वह वहाँ भी काम करते हैं, जिनके साथ भी करते हैं वो जल्दी थक जाते हैं। तो दोष किसका? अगर मेरे में नम्रता है, धैर्यता है, सच्चाई है तो अच्छा वातावरण बन जाता है। जो थकावट में काम करते हैं उन्हें योग में भी थकावट लगती है। सच्चाई, स्नेह और सहयोग से काम सहज हो जाता है।

जो दिल से काम नहीं करते वो अच्छा काम भी बिगाड़ देते हैं। अच्छा किया हुआ भी बिगाड़ देते हैं। उस समय पता नहीं पड़ेगा पर नुकसान बहुत होगा। वही हाथ सभी अंगुलियां मिलकर लड्डू बना सकती हैं, उसी हाथ से थप्पड़ भी मार देते हैं। हमारे एक हाथ में मुरली हो, दूसरे हाथ में स्वर्ग का गोला। हम दुनिया को स्वर्ग बना रहे हैं। स्वर्ग में रहेंगे पीछे पर संस्कार अभी बनायेंगे।

हमारे चेहरे और चलन को देखकर कहें कि ये तो स्वर्ग में रहते हैं। हमारी रॉयल पर्सनैलिटी को देख दूसरे भी पीछे-पीछे आने लगेंगे। हम अपना बैग बैगेज पहले से रवाना कर देते हैं। वहाँ पहुंचेंगे तो मिल जायेगा, साथ में क्यों ले जाऊं। जो संगम पर कर रहे हैं वह भविष्य के लिए कर रहे हैं। उसका उजूरा है सदा सन्तुष्ट। ऐसे नहीं कोई सीट मिले, कोई पोजीशन मिले, वो देवता कैसे बनेंगे!

कोई को बहाना बनाने की बड़ी आदत होती है। याद और सेवा में बहाना देने वाले को अधीनता ज़रूर होगी। उन्हें प्रकृति भी साथ नहीं देगी। कोई न कोई कर्मबन्धन निकल आयेगा, जो ऊंचा पुरुषार्थ करने नहीं देगा क्योंकि बहाना बनाने की आदत ने भाग्य बनाने से वंचित कर लिया। उसमें भी सूक्ष्म है ईर्ष्या। भले कोई भाषण करे, परिवार में मीठी जुबान न हो... तो कौन उन्हें पसन्द करेगा। कई हैं जो बर्तन मांजते भी सबसे बहुत स्नेह भरा सम्बन्ध रखते हैं। तो प्रालब्ध ज़्यादा किसकी बनेगी? जो कम्प्लेन करता है उसका भाग्य क्या होगा? अति सूक्ष्म है, सच्चा पुरुषार्थी न किसी की कम्प्लेन करता, न उसकी कोई कम्प्लेन करता।

हम सब मेहमान हैं, पर दूसरों की मेहमानवाजी करना भी अक्ल का काम है, जिसमें मेरेपन का अभिमान होगा वो मेहमान नहीं है। उसमें ट्रस्टीपन नहीं होगा। तो नुमाशाम के समय ऐसी स्थिति बनाके रखें। जो बच्चा, जो स्टूडेंट अच्छा होता है वो माँ-बाप टीचर की शिक्षा अनुसार चलता है। फिर जीवन भर याद रखता है कि यह मेरी माँ ने सिखाया, यह बाप ने सिखाया है। उनके प्रति अन्दर बहुत प्यार, रिगार्ड रहता है। वह अपने शिक्षक का नाम बाला करता है। सभी के मुख से निकलता है कि यह तो बिल्कुल एक्यूरेट है। तो बाबा हम सबको अपने समान महिमा योग्य बनाना चाहता है।

हम कुछ ऐसा करें जो बाबा हमें सर्टिफिकेट देवे कि हाँ, परिवर्तन मैंने देखा

अभी हम सबको यही दृढ़ लक्ष्य रखना है कि सदा ही स्वमानधारी रहें। स्वमान याद भी रहता है, ऐसे नहीं भूल जाते हैं लेकिन एक होता है सिर्फ ध्यान में रहना- हम यह हैं। एक होता है जैसे कोई जज है घर में भी जायेगा तो उसको यह तो याद है ना मैं जज हूँ, लेकिन जब जज कुर्सी पर बैठता है तो वो नशा एक और होता है। तो इसी रीति से हम साधारण स्मृति में तो रहते हैं क्योंकि बाबा ने भी तीन शब्द बोला व्यर्थ, निगेटिव और साधारण संकल्प। तो साधारण रीति से तो हम सब ब्राह्मण पवित्र जीवन वाले हैं, यह तो याद रहती ही होगी लेकिन उस नशे में रहना वो तब होगा जब हमारी स्मृति की सीट ठीक होगी, यानी स्मृति सदा इमर्ज होगी। आत्मिक स्मृति में रहकर हर कर्म करें।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

तो यह खास अन्डरलाइन करने की बात है कि अपने स्मृति को इमर्ज रूप में रखें। अभी हम लोगों को यह बीच-बीच में अन्डरलाइन करनी चाहिए कि स्मृति इमर्ज रूप में है? क्योंकि कारोबार तो चलानी पड़ती है, कारोबार में कारोबार की भी स्मृति थोड़ी मिक्स हो जाती है। कहाँ ज़्यादा कहाँ कम होती है, तो वो मिक्स होने से वो नशा थोड़ा कम होता है। अगर हम सब मिल करके संकल्प लें कि बाबा जो कहता है, जो देखने चाहता है, वह हम करके दिखायेंगे तो समानता और सम्पन्नता सहज आ जायेगी और हम सबसे बाबा प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेगा क्योंकि जब तक बच्चों की यह स्थिति अपने अन्दर प्रत्यक्ष नहीं है तो बाप कैसे प्रत्यक्ष होगा? हम कुछ ऐसा करें जो बाबा हमको सर्टीफिकेट देवे कि हाँ, परिवर्तन मैंने देखा। बाबा ने बच्चों से मिलन मनाने के लिए हाँ तो कर ली है, प्रोग्राम भी सबको मिल गया है लेकिन यह बाबा की बात याद रखनी चाहिए कि बाबा ने जो हमको संकल्प दिया कि मैं रिज़ल्ट देखना चाहता हूँ, सिर्फ फाइल में पत्र प्रतिज्ञा के नहीं एड करना चाहता हूँ। प्रत्यक्ष सम्पन्न और सम्पूर्ण मूर्ति देखना चाहता हूँ तो चलो हम फुल 100 नहीं लेकिन कुछ तो कदम बढ़ायें ना! जो बाबा कहे अच्छा चलो, 50 है, 60, 70 तक तो आवे, कुछ तो परिवर्तन बाबा देखे।

यह संकल्प करें और हम ब्राह्मणों के संकल्प में शक्ति तो है ही। अच्छे संकल्पों में अगर और एक्स्ट्रा दृढ़ता लायें तो क्या नहीं हो सकता है। लेकिन माया इसी में विघ्न डालने की कोशिश करती है। तो दृढ़ता को हम कमज़ोर नहीं करें, दृढ़ता का संकल्प लेके कुछ न कुछ परिवर्तन अपने में ज़रूर करें। वास्तव में तो परिवर्तन का लक्ष्य तो ऊंचा ही होना चाहिए। लेकिन हम फिर भी परिवर्तन शुरू करेंगे तो हो ही जायेगा और हमको ही बनना है और कौन आने हैं? तो जब हमें बनना ही है तो यह अगर सोचें, तो मैं समझती हूँ हो सकता है।

निजी गुण, कर्म और स्वभाव की समानता के आधार पर महानता

“मैं अवतरित हूँ” इसी स्मृति में रह हर कर्म करें

> यह गुण, कर्म और स्वभाव - गुण और कर्म भी हमारे ऐसे हों कि स्वाभाविक हो जायें। गुणों को हम अपने स्वभाव में लाने की कोशिश कर रहे हैं। पूरी तरह से वह हमारे नैचुरल स्वभाव नहीं हो गये, कभी कोई व्यक्ति ऐसी बात कर देता है जिससे उत्तेजना आ जाती, उत्साह नहीं रहता। तो बुद्धि कहती है कि शान्त रहो, शीतल रहो।

जो महान आत्मा होते हैं उनका मन, वचन और कर्म एक जैसा होता है। जैसा वह कहते हैं, जैसा वह मानते हैं वैसे ही फिर उसको चलन में लाते हैं तो महानता का यह एक विशेष चिन्ह है। और हम लोग भी जो महान बनने का प्रयत्न कर रहे हैं, पुरूषार्थ कर रहे हैं, हमारे जीवन में भी ऐसा ही होना चाहिए। तो पहले-पहले जब इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में प्रवेश करते हैं तो एक फार्म हमसे भरवाया जाता है और जीवन का लक्ष्य पूछा जाता है, उस पढ़ाई का एम एंड ऑब्जेक्ट बताया जाता है। उसमें कहते हैं कि हमें देवी-देवता बनना है। और उसकी व्याख्या करते हुए हम सबको यह कहते हैं- सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम... बनना है।

तो सर्वगुण सम्पन्न एक तो गुणों की विशेष बात हो गई। वैसे तो आमतौर से ऐसा होता है जैसे मनुष्य के गुण हो वैसे ही कर्म होते हैं। परन्तु यहाँ ऐसा नहीं है क्योंकि गुण हम धारण करने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। और कभी-कभी जो हमारे पुराने संस्कार हैं वह हमारे गुणों को ढक लेते हैं और पुराने संस्कार ऐसे कर्म करा देते हैं जो मन-बुद्धि कहती है कि यह कर्म अच्छा नहीं है, यह करना नहीं चाहिए फिर भी भूल कर देते हैं।

तो यह गुण, कर्म और स्वभाव - गुण और कर्म भी हमारे ऐसे हों कि स्वाभाविक हो जायें। गुणों को हम अपने स्वभाव में लाने की कोशिश कर रहे हैं। पूरी तरह से वह हमारे नैचुरल स्वभाव नहीं हो गये, कभी कोई व्यक्ति ऐसी बात कर देता है जिससे उत्तेजना आ जाती, उत्साह नहीं रहता। तो बुद्धि कहती है कि शान्त रहो, शीतल रहो। सहनशीलता का गुण धारण करो लेकिन स्वभाव ऐसा बन चुका है जो वह सहन नहीं करता। परन्तु बाबा की आज्ञा का पालन करने के कारण मजबूरी से वह धारण करता है। अभी स्वभाव हमारा ऐसा बन जाये कि गुण जो हैं वह हमारा नैचुरल स्वरूप हो जाये। अलग न रहें और उसी के अनुसार हमारे कर्म भी हों।

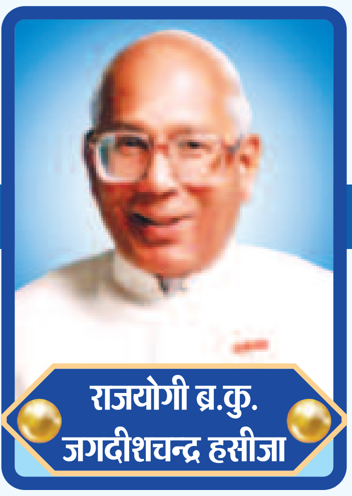

बाबा कहते हैं जो भी कर्म करो ऐसे समझो कि आपकी आत्मा ने ब्रह्मलोक से आकर शरीर में प्रवेश किया है। और ओम अर्थात् मैं शान्त स्वरूप, शुद्ध स्वरूप आत्मा हूँ... इस स्मृति में रहें। याद रखें कि हमारा यह नया जन्म हुआ है। नई दुनिया के लिए हम पुरूषार्थ कर रहे हैं, नया ज्ञान सुन रहे हैं, नया परिवार मिला है तो नवीनता आयेगी। हमारे गुण, कर्म और स्वभाव नये बनेंगे। लौकिक से अलौकिक बनेंगे, आसुरी से दिव्य बनेंगे और जो अपवित्र हैं वह पवित्र बनेंगे। शरीर के साथ रहते-रहते ऐसे हमारे सम्बन्ध हो गये हैं जो उन्हें भूलना कठिन हो गया है। इससे पक्की दोस्ती हो गई है। रात को स्वप्न भी देखेंगे तो अपने दोस्त का... कोई आत्मा और परमात्मा के स्वप्न थोड़े ही देखते हैं, देहधारियों का स्वप्न देखते हैं। स्वयं को भी देह में देखते हैं और देहधारियों के ही स्वप्न देखते हैं, देह की दुनिया के ही स्वप्न देखते हैं। तो देह से इतना लगाव-झुकाव हो गया है और इतनी अटैचमेंट हो गई है कि वह भूलता ही नहीं है।

यह आपको मालूम है कि जब ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए तो रात्रि को जब वह क्लास में मिलने गये तो बाबा ने क्या महावाक्य उच्चारण किये थे। बाबा ने कहा था निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी बनो। तो निराकारी कैसे बनोगे, जब यह सोचोगे कि ब्रह्म से हम पधारे हैं। ब्रह्मा बाबा की शुरू की, आदि, अन्त और मध्य तीनों कालों की यही आज्ञा रही है कि अपने को आत्मा समझो और यह समझो कि मैं परमधाम से उतरी हुई हूँ, इस कर्मक्षेत्र पर कर्म करने के लिए। देह से न्यारे होने की ड्रिल करो तो यह ड्रिल कैसे करेंगे? आत्मा की स्मृति कैसे रहेगी? जब पहले-पहले हम यह सोचेंगे कि हमारे बाबा जो हैं वह भी ब्रह्म से पधारे और हम भी ब्रह्म से पधारे।

तो हमारे ज्ञान का आदि-मध्य-अन्त क्या हुआ? हम यह सोचें कि हम भी वहाँ से आये हैं। पृथ्वी पर पाँव हमारे हों, लेकिन हमें अनुभव ऐसा हो, याद हमारी ऐसी हो कि हम लाइट के हैं और ब्रह्म से आये हैं तो वह तो लाइट का देश है, साइलेंस का देश है, पवित्रता का देश है, तो ऐसे उस देश से हम आये हैं तो हमारे बोल, गुण, कर्म, स्वभाव अपने आप ही बदलेंगे, तो यह मत भूलो। - क्रमशः

छतरपुर-म.प्र.। महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर के तृतीय दीक्षांत समारोह में आये राज्यपाल मंगू भाई पटेल से सौजन्य मुलाकात के दौरान छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन ने उन्हें शॉल पहनाकर सम्मानित किया। साथ ही ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की विभिन्न सेवाओं से अवगत कराया। इस मौके पर ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. कल्पना बहन, ब्र.कु. रीमा बहन व ब्र.कु. आरती बहन उपस्थित रहीं।

शांतिवन। ओमशान्ति मीडिया कार्यालय में आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् बिग बॉस 17 की कंटेस्टेंट और जानी मानी पूर्व क्राइम रिपोर्टर और लेखक जिग्ना वोरा को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ओमशान्ति मीडिया के संपादक डॉ. ब्र.कु. गंगाधर भाई। साथ हैं डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

मेंदरडा-जूनागढ़(गुज.)। सेवाकेन्द्र में 'पीस पार्क भूमि पूजन' के कार्यक्रम में जूनागढ़ जिला पंचायत प्रमुख हरेशभाई ठुम्मर को प्रसाद भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. इला बहन, जूनागढ़ से ब्र.कु. बीना बहन एवं ब्र.कु. शांतु बहन।

आस्का-ओडिशा। खेलो इंडिया नेशनल गोल्ड मेडलिस्ट इन पैरा वेट लिफ्टिंग गदाधर साहू एवं निराकार बिशोई,प्रकृति बंधु अवॉर्ड विनर को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. प्रवाती बहन।

वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए संस्थान की अति. मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी। मंचासीन हैं ब्र.कु. हंसा दीदी, सीए ब्र.कु. ललित भाई, राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. मीना बहन,लंदन, ब्र.कु. इशिता बहन व अन्य।

धमतरी-छ.ग.। बसंत पंचमी के अवसर पर रायपुर रोड स्थित आत्म अनुभूति तपोवन सेवाकेन्द्र में मिलेनियम स्कूल के पहली से चौथी कक्षा के बच्चों के लिए कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर मिलेनियम स्कूल से शिक्षिका शबाना खान, शिक्षिका दीपमाला तिवारी, शिक्षिका नवनीत कौर, शिक्षिका संजना गुप्ता, शिक्षिका रश्मि कौर व शिक्षिका आयशा बहन मौजूद रहे। इस मौके पर ब्र.कु. सरिता दीदी ने बच्चों को अच्छी सीख दिलाने के उद्देश्य से कार्यक्रम में शामिल करने के लिए मिलेनियम स्कूल की संचालिका श्रुति साहेब की सराहना की व बच्चों का मार्गदर्शन किया तथा सुषमा नंदा ने बच्चों को शिक्षाप्रद गेम कराये।

फरीदाबाद से.21डी-हरियाणा। 7वें इंटरनेशनल सूरजकुंड हैंडीक्राफ्ट मेला फरीदाबाद में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नशा मुक्ति प्रदर्शनी लगाकर सभी को व्यसन मुक्ति की दवाई फ्री में दी गई। जिसका 1200 से अधिक लोगों ने लाभ लिया। साथ ही आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसका देश सहित विदेश से आये 10000 से अधिक लोगों ने अवलोकन किया। इस दौरान ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. रंजना बहन, ब्र.कु. रामकुमार भाई, ब्र.कु. डॉ. मोनिका बहन सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

पटना सिटी-पंचवटी कॉलोनी(बिहार)। नवनिर्वाचित बिहार विधान सभा अध्यक्ष नन्द किशोर यादव को उनके आवास पर जाकर बधाई एवं ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानी बहन।

रीवा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा वृद्ध आश्रम में वृद्ध जनों की सेवा के शुभारंभ कार्यक्रम में डॉ. बी.एल. मिश्रा,संयुक्त संचालक स्वास्थ्य सेवाएं,से.नि., डॉ. प्रभाकर चतुर्वेदी,अध्यक्ष,भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी, हाजी एके खान,वाइस चेयरमैन भारतीय स्टेट को. सोसायटी रीवा, डॉ. के.के. परोहा,वरिष्ठ समाजसेवी, डॉ. लाल बहादुर सिंह,पूर्व जनपद अध्यक्ष एवं अध्यक्ष,संग्राम तीर्थ शौर्य, डॉ. एच.के. पांडेय,सचिव मानस मंडल, बीपी सिंह,अध्यक्ष,कल्पना कल्याण समिति, महासचिव कल्पना कल्याण समिति श्रीमती मधु सिंह, ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, लोकप्रिय गीतकार नितेश श्रीवास्तव, प्राचार्य आईटीआई ब्र.कु. दीपक तिवारी, ब्र.कु. मैनेजर आर.बी. पटेल, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. प्रकाश भाई व अन्य गणमान्य नागरिकों सहित वृद्ध आश्रम प्रबंधन से जुड़े अधिकारी, कर्मचारी व 25 से अधिक वृद्धजन शामिल रहे।

गया-सिविल लाइन(बिहार)। भूसंडा गया में महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में रैली निकालकर गांव-गांव में शिव ध्वज लहराकर सभी को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें।

तीन बातें ऐसी... जिससे हर समस्या पार कर सकते...

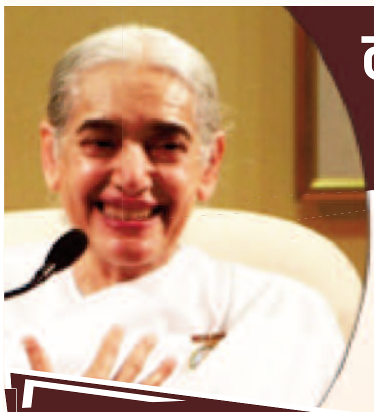

राजयोगिनी ब्र.कु.जयंती दीदी,अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़

आज के संसार की हालत देखकर अवश्य ही ये संकल्प आता होगा कि ये कलियुग चल रहा है। परंतु न ये कलियुग है बल्कि कलियुग की अंतिम घड़ियों को हम देख रहे हैं। हर घर में झगड़ा चल रहा, और विश्व भर में भी, पूरे विश्व के कोने में झगड़े चल रहे हैं। प्रकृति जिसने हमें इतना सहयोग दिया है, पालना दी है, इतनी सेवा दी है, आज प्रकृति के जो भी तत्व हैं आज जैसे ही मनुष्यों के साथ युद्ध चल रही है। मनुष्यात्मा की स्थिति को देखकर ये प्रश्न आता है कि अभी यदि ये बातें बढ़ती जा रही हैं तो आगे चलकर कैसे इन बातों को मैं सहन कर सकेंगी, अथवा कैसे इन समस्याओं को पार कर सकेंगे! तो परमपिता परमात्मा शिव के महावाक्य ये हैं कि यदि हम अपने अन्दर की स्थिति को ठीक करके रखते हैं, परमपिता परमात्मा के साथ प्यार का नाता जोड़कर रखते हैं तो जो भी बातें सामने आयेंगी तो अवश्य ही ऊपर के द्वारा हमें ऐसी शक्ति मिलेगी जिससे हम हर बात सहज पार कर सकेंगे।

आपने देखा होगा कि आज के संसार में बहुत कम लोग होंगे जिन्हों को खुद की पहचान होगी। बाहर की पहचान मैं नहीं बता रही। अन्दर की, खुद की पहचान कि आखिर मैं कौन हूँ? या ये चमड़ी है, मेरी पहचान देती है, रंग-रूप, रूपया या इन सब बातों के आधार से ही मेरी पहचान होगी या कुछ अन्दर चैतन्य शक्ति आत्मा हूँ। हम जब अपनी पहचान देते हैं किसी को तो टोटल ही अपनी बाहर की पहचान देते हैं। परंतु अन्दर की बातों से भी पहचान हो सकती है। वो ही सही पहचान है। क्योंकि आज मेरा रूप कुछ भी हो अचानक कुछ भी हो सकता। और अचानक कुछ न भी हो जैसे दिन बीतते जायेंगे, वर्ष बीतते जायेंगे इस रूप में अन्तर बहुत सारा आता रहेगा। कहने का मतलब तो ये कि रूप तो हमारी पहचान नहीं देता। बैंक बैलेंस, हमारा रूपया भी हमारी पहचान नहीं दे सकता कि मैं किस प्रकार का व्यक्ति हूँ? परंतु जब हम किसी के साथ कार्य-व्यवहार में आते हैं तब हमारे चलन से, हमारे बोल-चाल से, हमारे व्यवहार से जो हमारी आन्तरिक पहचान है वो खुद ही प्रकट हो जाती है।

मैं आत्मा अजर, अमर, अविनाशी हूँ तो भविष्य के लिए कोई प्रकार का डर नहीं रहता। क्यों? क्योंकि हमें मालूम है कि आत्मा पर न पानी का, न आग का कुछ भी असर हो सकता, कोई चाकू चलाये कुछ भी करे परंतु आत्मा मैं अजर, अमर, अविनाशी हूँ। मैं भृकुटि के बीच में विराजमान हूँ।

परंतु खुद अपने आपको किस तरह से पहचान सकती हूँ? बड़ी शांति में कुछ क्षण, आत्मा को जानने के लिए कुछ अभ्यास करते हैं और कुछ स्टडी भी करते हैं। उसमें भी मुझे तो जिन बातों की पहचान मिली है राजयोग के द्वारा, वो इस तरह से इतनी सुन्दर पहचान मिली है जिससे आत्मा बिल्कुल अपने आपको जानकर, अपने आदि स्वरूप को पहचानकर, वो जो अपने असली गुण हैं उसका अनुभव चल रहा है। तो आत्मा क्या है? आत्मा है ज्योति स्वरूप। आत्मा का स्वरूप क्या है? आत्मा का स्वरूप है शांति, प्रेम, सत्यता, पवित्रता और आनंद। ये हैं पाँच आत्मा के अनादि , अविनाशी गुण। जब हम खुद को भूल जाते हैं तो जो आन्तरिक स्थिति हमारी है, वो जो हमारा आन्तरिक स्वरूप है वो हमसे दूर हो जाता। हम वहाँ तक पहुंच नहीं पाते हैं। तो उसके नतीजे में बाहर जाते हैं, ठोकरे खाते हैं फिर सोचते हैं कि कोई ऐसी जगह हो जहाँ शांति मिले। कोई ऐसा व्यक्ति हो जहाँ से मुझे सुख मिले। परंतु ज्ञान के आधार से और योग अभ्यास के आधार से हमें ये पहचान होती रहती और अनुभव भी होता कि ये सब बाहर की वस्तुएं नहीं हैं ये है आन्तरिक आत्मा के निज गुण।

जब हम साइलेंस की यात्रा करते हैं, शांति में अपने आपको देखते हैं वो जो बाहर की बातें हैं मटेरियलिज़्म की(भौतिकवाद), कंज़्यूमरिज़्म(उपभोक्तावाद) की उन्हों को बाहर रख के हम खुद अपने आपसे वार्तालाप करके, रूहरिहान करके खुद को जानने का पुरूषार्थ करते। तो हमें अपने एक-एक गुण का अनुभव होता जाता। जब इस आधार पर हमें ये पहचान होती कि मैं आत्मा अजर, अमर, अविनाशी हूँ तो भविष्य के लिए कोई प्रकार का डर नहीं रहता। क्यों? क्योंकि हमें मालूम है कि आत्मा पर न पानी का, न आग का कुछ भी असर हो सकता, कोई चाकू चलाये कुछ भी करे परंतु आत्मा मैं अजर, अमर, अविनाशी हूँ। मैं भृकुटि के बीच में विराजमान हूँ। और शरीर को कुछ भी कष्ट होता, हाँ, बेशक आत्मा को तो अनुभव होता ही है परंतु यदि हम आत्म स्मृति का अभ्यास करते तो आत्म स्मृति द्वारा जो हम शरीर से डिटैच होंगे, न्यारेपन की स्थिति में हम अपने आपको मजबूत, शक्तिशाली बनाते हैं उससे कई बातों का हो सकता बीमारी आये, कठिन समय आये लेकिन मुझे ये याद रखना है कि मैं कौन हूँ और मेरे अन्दर किस प्रकार से खज़ाना जमा किया हुआ है। सिर्फ मुझे अपने साथ थोड़ा समय बिता करके खज़ाने को देखना होगा।

- क्रमशः

पुसौर-रायगढ़(छ.ग.)। माननीय मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. जेमा बहन व ब्र.कु. सीता बहन। साथ हैं राज्य के वित्तमंत्री ओ.पी. चौधरी तथा अन्य विधायकगण।

दिल्ली-द्वारका। रेडिसन ब्लू होटल में सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री व सांसद हेमा मालिनी तथा भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजू के हाथों से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सदस्य 183 वर्ल्ड रिकॉर्ड करने वाले पहले भारतीय डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को देश-विदेश में संस्थान के राजयोग का प्रचार और प्रसार करने के लिए 'राइज़िंग भारत रीयल हीरो 2024' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर दिल्ली के पश्चिम विहार सेवाकेन्द्र की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. सरिता बहन, बरेली सेवाकेन्द्र की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. रजनी बहन, बिज़नेस विंग दिल्ली के कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. सुरेंद्र भाई तथा ब्र.कु. सोनिया नागपाल भी उपस्थित रहे।

मावलीकरा-केरल। अयोध्या में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में स्थानीय सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. भगवान भाई,माउण्ट आबू, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. दिशा बहन, उन्नितताव,रेलवे इंजीनियर, तम्बी भाई,डायरेक्टर,कृषि विभाग तथा ब्र.कु. सोनिया बहन।

पटना-बुद्धा कॉलोनी(बिहार)। डॉ. सुमन कुमार,एमबीबीएस, एमडी,डीसीएच, डीएनबी(1),चाइल्ड स्पेशलिस्ट,पटना मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, डॉ. हेमा नारायण,एमबीबीएस,एमएस,गायनेकोलॉजिस्ट एवं श्रीमती कुमुद सिन्हा,डायरेक्टर ऑफ हर्ष क्लिनिक,बुद्धा कॉलोनी,पटना को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मृदुल बहन,स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र।

उज्जैन-म.प्र.। अयोध्या में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ऋषि नगर स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में 151 दीप जलाये गये एवं सेवाकेन्द्र को लाइट व फूलों से सजाकर भव्य उत्सव मनाया गया। साथ ही इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा मिलकर प्रभात फेरी निकाली गई।

पुणे-महा.। महानगरपालिका द्वारा पुणे महापालिका के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में उद्यान विभाग की ओर से छत्रपति संभाजी महाराज उद्यान में आयोजित 42वें फल-फूल प्रदर्शनी में ब्रह्माकुमारीज़ जगदम्बा भवन सेवाकेन्द्र द्वारा शाश्वत यौगिक खेती की प्रदर्शनी लगाई गई, जिसके लिए सेवाकेन्द्र को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रदर्शनी के उद्घाटन में पुणे महानगरपालिका के कमिश्नर विक्रम कुमार, मुख्य उद्यान अधीक्षक अशोक घोरपडे, उद्यान अधीक्षक संतोष कुमार कांबळे, टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ के कुलपति दीपक टिळक, अति. महापालिका कमिश्नर विकास ढाकणे, रोज सोसायटी की सेक्रेट्री ऋचा कुलकर्णी, मुख्य सुरक्षा अधिकारी राकेश विटकर, ब्र.कु. भाग्यश्री बहन, ब्र.कु. शारदा बहन, ब्र.कु. स्वाति बहन, ब्र.कु. सुप्रिया बहन, विठ्ठल भाई, राम भाई, महाराष्ट्र शासन के कृषिभूषण पुरस्कार विजेता ब्र.कु. भगवान इंगोले आदि उपस्थित रहे।

दिल्ली-नरेला। नव वर्ष के अवसर पर कस्तूरी राम कॉलेज ऑफ हायर एजुकेशन की प्रिंसिपल डॉ. सीमा शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. दुर्गा बहन, ब्र.कु. रानी बहन व ब्र.कु. देवेंद्र भाई।

मुम्बई-विले पार्ले वेस्ट। होटल ताज पैलेस में आयोजित लॉन्चिंग एंड अवॉर्ड इवेंट के दौरान इंडियन क्रिकेट टीम के कैप्टन रोहित शर्मा को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. क्रीना बहन व ब्र.कु. अमृता बहन। इस मौके पर उपस्थित सभी लोगों को ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ईश्वरीय संदेश दिया गया व ईश्वरीय सेवाओं से परिचित कराया गया।

एसबीएस नगर-नवाँशहर(पंजाब)। जिला बार एसोसिएशन के नव नियुक्त प्रधान एडवोकेट शमशेर सिंह को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. राम भाई।

जानें....

सम्पूर्ण अन्तवाहक फरिश्ता स्वरूप की ड्रेस पहन विचरण करें

जीवन में आने वाले पेपर को पार करने की युक्ति

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि अभी जैसे-जैसे अन्तिम समय की ओर आगे बढ़ रहे हैं तो नैचुरल है कि दो बातों का पेपर विशेष हमारे सामने आयेगा। ये हर ब्राह्मण को क्रॉस करना ही है। अब आगे पढ़ते हैं कि वो दो पेपर कौन से हैं...

एक आता है शरीर का, शारीरिक भोगना का। क्योंकि कई ऐसे कार्मिक अकाउंट हमने क्रिएट किए हैं इन कर्मेन्द्रियों से तो उसका हिसाब तो चुकाना पड़ेगा ही। और दूसरा अपने संस्कारों का। बाबा कहते हैं, जैसे-जैसे अन्तिम समय आता जायेगा तो माया भी फुल फोर्स से उभरेगी। हमारे ही कमज़ोरी के संस्कार जो हैं जिसको हमने मिटाया नहीं, दबा कर रखा है। ज्ञान की समझ से हमने उस संस्कार को दबा कर रखा है। तो जैसे-जैसे अन्तिम समय आयेगा वो संस्कार फुल फोर्स से बाहर आयेगा और हमें परेशान करेगा, हमारी स्थिति को हलचल में ला देगा। तो ये दो पेपर खुद से हैं।

तो देखो बाहर के जो विघ्न आयेंगे उनको निपटाना सहज है। ड्रामा कल्याणकारी है कहना सहज है, लेकिन खुद, खुद के पेपर बन जायें तो? उसको फेस करना बहुत मुश्किल होगा। बाहर के किसी भी आत्मा का संस्कार देख कर उसको योग दान दे सकेंगे, उसको शांति का दान दे सकेंगे या साक्षी होकर देखने से उस स्थिति, परिस्थिति को पार करना आसान हो जायेगा। उस समय ज्ञान को यूज़ करना सहज हो जायेगा। लेकिन जब खुद के अन्दर ये सब पेपर आयेंगे जो बाबा ने कहा है कि कभी-कभी बच्चे अलबेलेपन के कारण सोचते हैं छोटी-सी कमज़ोरी है ना, समय आने तक ठीक हो जायेगी, उसको ऐसे कहकर चला रहे हैं। लेकिन ये नहीं मालूम कि समय आने पर वो ठीक होने के बजाय फुल फोर्स के साथ बाहर आयेगी और वही हमारा पेपर बनेगी। तो इसीलिए बाबा कहते कि अपने आपको तो व्यक्ति अच्छे से जानते हैं कि मेरी कमज़ोरी कहां-कहां है तो अभी से उन कमज़ोरियों को मिटाने के लिए बाबा सकाश दे रहा है, रेडिएशन दे रहा है पॉवरफुल, वो ज्वाला स्वरूप स्थिति से वो बीज को जला रहे हैं बाबा। ताकि वो हमारे लिए पेपर बनकर हमारे सामने न आये। तो उस संस्कार रूपी बीज को जलाना है। उसके लिए विशेष क्या चाहिए? एक तो बेहद की वैराग्य वृत्ति चाहिए तभी तो हम अपने आप से संस्कार को अलग करके, उस संस्कार को ही बाबा से पॉवरफुल किरणें लेकर भस्म करें।

कभी-कभी बच्चे अलबेलेपन के कारण सोचते हैं छोटी-सी कमज़ोरी है ना, समय आने तक ठीक हो जायेगी, उसको ऐसे कहकर चला रहे हैं। लेकिन ये नहीं मालूम कि समय आने पर वो ठीक होने के बजाय फुल फोर्स के साथ बाहर आयेगी और वही हमारा पेपर बनेगी।

बाबा कहते हैं कि बच्चे जब तुम मेरी याद में बैठते हो आत्मा समझकर कई जन्मों का पाप कर्म दग्ध हो जाता है, भस्म हो जाता है। तो बाबा से वो सकाश प्राप्त करना माना बाबा तो किरणें दे रहा है लेकिन हमें उस किरणों के द्वारा उस पुराने संस्कार को भस्म करना है। तो ऐसी ज्वाला स्वरूप स्थिति हमारी हो जो उस पुराने संस्कार को दग्ध करे।

दूसरा जो कहा कि किसी बीमारी के रूप में पेपर आना है। क्योंकि उसमें भी हमारी सहनशक्ति बहुत अधिक होनी चाहिए। अगर सहन नहीं होगा तो क्या होगा? तड़पन का अनुभव करेंगे, वो बीमारी भी तड़पन का अनुभव करायेगी। पूरी अवस्था हमारी हिला देगी और उसी अवस्था में यदि हमारा शरीर छोड़ना हुआ तो किस पद को हम प्राप्त करेंगे? शहज़ादे के रूप में जायेंगे या प्रजा में जायेंगे? तो इसीलिए बाबा कहते कि कर्मेन्द्रिय में भी इतनी बाबा से सकाश लेकर भरना है ताकि वो कर्मेन्द्रिय में इतनी पॉवर आ जाये कि वो बीमारी हमें अन्दर से तकलीफ न पहुंचा सके, वो आये और अपना हिसाब चुक्तू करके समाप्त हो जाये। स्थिति ऐसी पॉवरफुल बनानी है कि शरीर का कर्मभोग आत्मा के योगबल को हिला न सके। इतना अन्दर में योगबल को जमा करना है। तो बाबा की सकाश से अन्दर आत्मा में बल जमा करते जायें, जो इन पेपरों को क्रॉस करना आसान हो जाये।

- क्रमशः

धडगांव-महा.। लोकसभा सांसद हिना गावित से मुलाकात कर ब्र.कु. सरिता बहन ने आदिवासी दुर्गम क्षेत्र में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा हो रही ईश्वरीय सेवाओं की जानकारी दी। साथ ही उन्हें स्थानीय सेवाकेन्द्र एवं मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण भी दिया।

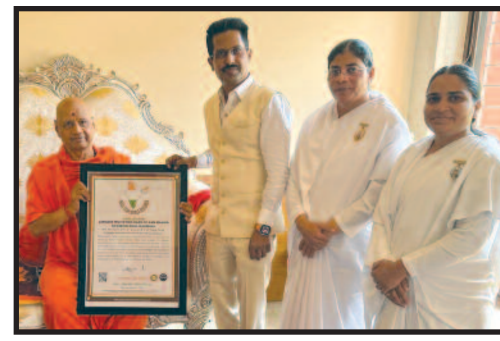

पुणे-महा.। आळंदी स्थित वेदश्री तपोवन आश्रम में श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष परमपूज्य स्वामी गोविंद देव गिरीजी महाराज को उनके 75वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में बाणेर सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. त्रिवेणी बहन, ब्र.कु. आशा बहन एवं डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके ने बधाई एवं ईश्वरीय सौगात देकर संस्थान की गतिविधियों से अवगत कराया तथा अयोध्या में हुए श्री रामलला की प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव की सबसे बड़ी 50 फीट ऊँची बनी निमंत्रण पत्रिका की जानकारी देने के साथ ही इसके वर्ल्ड रिकॉर्ड का सर्टिफिकेट भी उन्हें भेंट किया। साथ ही उन्हें ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू में आने का निमंत्रण भी दिया।

बिलासपुर-शुभम विहार(छ.ग.)। नवनिर्वाचित नगर विधायक अमर अग्रवाल को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. सविता दीदी।

सेल्फ हेल्प

हम वास्तविकता में क्यों नहीं हैं?

मन हम सबका है। हमेशा है, साथ है लेकिन दुविधा में रहता है। जीना चाहता है लेकिन अपने दम पर नहीं दूसरे के बिहाफ पर, दूसरे के दम पर, दूसरे के कहने पर। चाहता है कि मैं वो करूं जो मैं चाहता हूँ लेकिन वो हमेशा उन बातों को अपनाता है जो दूसरे चाहते हैं। फिर भी असन्तुष्टि है। असन्तुष्टि का यही एकमात्र कारण है कि जीवन हमेशा बयानों से भरा हुआ है। एक है जो आप करना चाहते हैं दूसरा है दुनिया जो आपसे करवाना चाहते हैं। आपने सबके कहने पर वो कर तो लिया लेकिन क्या आप कभी सन्तुष्ट हुए? शायद नहीं हुए। क्यों नहीं हुए, क्योंकि जो आपकी अपनी विशेषता है, जो आपकी अपनी स्थिति है, जो आपके अपने गुण हैं वो आप सबके सामने नहीं रख पा रहे हैं। तो निर्णय क्यों नहीं होता, क्यों नहीं ले पाते! मात्र कारण है इसके पीछे, वो है अपने को तरजीह(प्रधानता) नहीं देना, अपने पर वो विश्वास नहीं दिखाना, अपने को प्राथमिकता न देना। जब हम अपने को प्राथमिकता नहीं देते तो लोगों को प्राथमिकता देते हैं। इसीलिए दुनिया में एक बहुत सुन्दर कहावत है कि जो अपने लिए नियम नहीं बनाता उसको दूसरों के नियमों पर चलना पड़ता है। तो मैं भी तो ये काम कर सकता हूँ ना! तो क्यों न उन बातों को अपने अन्दर डालूं, अपने लिए कुछ सोचूं, अपने लिए कुछ लिखूं, अपने लिए कुछ बनाऊं। और वो बनाया हुआ चीज़ ही मेरा होगा। उससे जीवन भी बदलेगा, जीवन सुधरेगा, जीवन में उन्नति होगी, जीवन में उन सारी चीज़ों की ज़रूरतें भी पूरी होंगी जो आप चाहते हैं। और सबसे बड़ी बात मन को सन्तुष्टि होगी। तो ये खुद से खुद को प्यार करने की एक पहल है। तो क्यों न इस पहल को अपनाते हैं और जीवन को एक नयी दिशा में लेकर चलते हैं।

रीवा-झिरिया(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में गणतंत्र दिवस के अवसर पर 'एक शाम देश के नाम' विषयक देशभक्ति के विशिष्ट सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ संयोजक सरदार गुरमीत सिंह मंगू, सिंधी सेंट्रल पंचायत के अध्यक्ष सरदार प्रहलाद सिंह, प्राध्यापक कला संकाय डॉ. प्रवीर दुबे, समाजसेवी अविराज चौथवानी, स्ट्रीट फाइटर डांस ग्रुप के डायरेक्टर स्पर्श दुबे, डीसेंट डांस ग्रुप के संयोजक राजीव वर्मा, हिमालय डांस ग्रुप के संयोजक जावेद खान, मगुर हाई स्कूल के संचालक उमेश कुमार सेन, पप्पू कनौजिया ओबीसी के संभागीय अध्यक्ष, वरिष्ठ पत्रकार प्रकाश तोमर, ब्रह्माकुमारीज़ रीवा के कला एवं संस्कृति प्रभाग की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर भोपाल ज़ोन राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, कला एवं संस्कृति प्रभाग के सदस्य ब्र.कु. प्रकाश द्विवेदी सहित बड़ी संख्या में कलाकार व विशिष्ट नागरिक उपस्थित रहे।

मुम्बई-बोरीवली। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा टाटा मेमोरियल सेंटर में 'नर्सेस डे' एवं 'रिज्यूवनेटिंग मेडिकल माइंड्स' मेडिकल विंग की कॉन्फ्रेन्स के दौरान आयोजित दो दिवसीय 'माइंड स्पा' में सभी को मेडिटेशन करने के लिए ऑडियो, विज़ुअल, स्क्रॉल टेक्स्ट और लिरिकल/सॉन्ग के चार विकल्प दिये गये। जिसका टाटा हॉस्पिटल के डॉक्टर्स, नर्सेस, सिक्योरिटी स्टाफ तथा अन्य ऑफिस स्टाफ ने लाभ लिया। कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी,जॉइंट एडमिनिस्ट्रेटिव हेड,ब्रह्माकुमारीज़, डॉ. अशोक मेहता,कैंसर सर्जन एंड प्रेसिडेंट,मेडिकल विंग कॉन्फ्रेन्स चेयरमैन, डॉ. श्रीपद बनावली,डायरेक्टर(एकाडेमिक),टाटा मेमोरियल सेंटर, डॉ. प्रशांत काकोड़े,ऑटोराइनोलैरिन्गॉलजी एंड इंटेग्रेटेड हेल्थ,इनर स्पेस कैम्ब्रिज,यूके सहित अन्य विशिष्ट लोग मौजूद रहे एवं कार्यक्रम की सराहना करते हुए इसे सबके लिए ज़रूरी बताया।

बिजावर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा भारतीय राष्ट्रीय पर्यटन दिवस के मौके पर शासकीय अनु जाति सीनियर कन्या छात्रावास बिजावर में 'मेरी संस्कृति-मेरी पहचान, मेरा देश-मेरी शान' कार्यक्रम के दौरान छात्रावास की अधीक्षक माया बहन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रीति बहन। इस मौके पर ब्र.कु. रचना बहन, छात्रावास सहायक श्रीपाल कुशवाहा सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

राजनांदगांव-छ.ग.। महारानी लक्ष्मीबाई कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में 'परीक्षा के भय से मुक्ति' विषय पर विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रभा बहन। मंचासीन हैं विद्यालय के प्राचार्य चैतराम वर्मा, ब्र.कु. रंभा बहन, ब्र.कु. तरुणा बहन व अन्य।

शहद खायें और सेहत बनायें

शहद का इस्तेमाल प्राचीन काल से ही होता आया है और शहद के फायदे के बारे में आयुर्वेद में भी प्रमुखता से उल्लेख मिलता है। आयुर्वेद में शहद को एक औषधि का दर्जा हासिल है और अब पूरी दुनिया में लोग मिठास के लिए भी शहद का इस्तेमाल करने लगे हैं। पिछले कुछ दशकों में शहद पर हुए कई वैज्ञानिक शोध आयुर्वेद में बताए इसके गुणों की पुष्टि करते हैं।

शहद का उपयोग आप किसी भी रूप में करें यह आपकी सेहत के लिए उतनी ही फायदेमंद है। बस इसके इस्तेमाल से पहले यह ज़रूर जांच लें कि उपयोग में लाया जा रहा शहद असली है या मिलावटी, क्योंकि मिलावटी शहद खाने से सेहत को कई नुकसान हो सकते हैं। तो चलिए जानते हैं इसके फायदे और उपयोग...

शहद के फायदे व उपयोग

शहद के फायदों को देखते हुए ही आयुर्वेद में इसे अमृत समान माना गया है। छोटे बच्चों से लेकर व्यस्कों तक शहद सभी के लिए उतना ही फायदेमंद है। नियमित रूप से शहद खाने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है जिससे कई तरह की संक्रामक बीमारियों से बचाव होता है। आइये शहद के प्रमुख फायदों के बारे में विस्तार से जानते हैं।

कटने या जलने पर...

त्वचा के कटने छिलने या जल जाने पर भी शहद का उपयोग करना बहुत लाभकारी है। शहद में मौजूद एंटीसेप्टिक गुण जले हुए हिस्से को जल्दी ठीक करते हैं और त्वचा को संक्रमण से भी बचाते हैं।

उपयोग विधि : अगर आपकी त्वचा में हल्की खरोंच आ गयी है या कोई हिस्सा मामूली रूप से जल गया है तो उस हिस्से पर शहद लगाएं। यह जलन को कम करती है और उस हिस्से में संक्रमण को रोकती है।

गले की खराश...

शहद के फायदे की लिस्ट में गले की खराश दूर करना भी शामिल है। यह खांसी और सर्दी-जुकाम से तो आराम दिलाती ही है साथ ही अगर आपका गला बैठ गया है या गले में खराश है तो भी आप शहद का सेवन करके आराम पा सकते हैं।

सेवन विधि : गले की खराश से जल्दी आराम पाने के लिए एक चम्मच अदरक के रस में एक से दो चम्मच शहद मिलाकर दिन में दो बार इसका सेवन करें।

रूखी त्वचा वालों के लिए...

शहद के फायदे सिर्फ पाचन और इम्युनिटी बढ़ाने तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि यह त्वचा में निखार लाने में भी मदद करती है। शहद में ऐसे गुण होते हैं जो आस-पास की नमी को सोख लेती है और त्वचा की नमी को बरकरार रखने में मदद करती है। जिन लोगों की त्वचा बहुत रूखी होती है उन्हें अपनी त्वचा को नम बनाये रखने के लिए शहद का इस्तेमाल करना चाहिए।

उपयोग विधि : एक चम्मच शहद लें और इसे त्वचा के रूखे हिस्से पर लगाएं।15-20 मिनट तक इसे सूखने दें और फिर ठंडे पानी से धो लें। इसे एक हफ्ते में कम से कम तीन बार प्रयोग करें।

बालों के लिए फायदेमंद...

बालों के रूखेपन के कारण बाल तेजी से झड़ने लगते हैं। शहद के उपयोग से बालों की सुन्दरता बढ़ती है और उनके रूखेपन में कमी आती है। शहद में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट गुण बालों के लिए फायदेमंद है। यही फ्री रेडिकल को हटाती है और ज़्यादा देर तक धूप में रहने से या किसी हानिकारक केमिकल से बालों को होने वाले नुकसान को रोकती है। शहद से बालों को सही पोषण भी मिलता है।

उपयोग विधि : दही के साथ शहद को मिलाकर हेयर मास्क बना लें और इसे बालों पर लगाएं। इससे खराब बालों को पोषण मिलता है।

शहद के नुकसान और सेवन से जुड़ी सावधानियां

शहद के फायदे तो अब आप सभी को पता चल ही चुके हैं लेकिन क्या आप जानते हैं कि शहद के सेवन से कुछ नुकसान भी हो सकते हैं? तो चलिए जानते हैं...

- अगर आप सामान्य रूप से खाने में शहद का सेवन कर रहे हैं तो दिन भर में एक से दो चम्मच का सेवन पर्याप्त है और अगर आप इसे औषधि के रूप में या त्वचा के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं तो चिकित्सक द्वारा बताए खुराक के अनुसार ही सेवन और उपयोग करें। अधिक मात्रा में सेवन करने से उल्टी मिचली आना और कुछ मामलों में डायरिया की शिकायत हो सकती है।
- आधुनिक चिकित्सा पद्धति में ऐसा माना गया है कि एक साल से कम उम्र के बच्चों को शहद नहीं खिलाना चाहिए। इससे बच्चों में बोटुलिज़्म का खतरा हो सकता है। इसलिए अगर आप एक साल से कम उम्र के बच्चे को शहद खिलाना चाहते हैं तो पहले डॉक्टर की सलाह लें। इसी तरह छोटे बच्चों की त्वचा पर भी शहद लगाने से परहेज करना चाहिए।
- शोध के अनुसार जिन लोगों को पराग कणों से एलर्जी होती है, अगर वे शहद का उपयोग करते हैं तो उनकी एलर्जी और बढ़ सकती है।
- अगर आपकी त्वचा बहुत संवेदनशील है तो सीधे तौर पर शहद न लगाएं, बल्कि शहद में गुलाब जल या दूध मिलाकर उसे पतला कर लें और फिर उसे त्वचा पर लगाएं। दूध और शहद का मिश्रण त्वचा के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है।
- कई लोगों के मन में यह सवाल रहता है कि क्या डायबिटीज के मरीज शहद का सेवन कर सकते हैं? या चीनी की बजाय शहद का सेवन डायबिटज के मरीजों के लिए ज़्यादा फायदेमंद है? आपकी जानकारी के लिए बता दें कि जिन लोगों का डायबिटीज नियंत्रण में है वे खाने के तौर पर शहद का सेवन कर सकते हैं। शहद के सेवन से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है जिससे डायबिटीज से होने वाली समस्याओं से बचाव होता है। लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि अगर आपका शुगर लेवल अनियंत्रित रहता है तो फिर शहद से परहेज करें। मधुमेह के मरीज शहद का सेवन करने से पहले डॉक्टर की सलाह ज़रूर लें।

गर्भावस्था और स्तनपान के दौरान

वैसे तो शहद के फायदे हर उम्र के लोगों के लिए उपयोगी है लेकिन गर्भावस्था और स्तनपान के दौरान आप इसका सीमित मात्रा में ही सेवन करें। अगर आप शहद का सेवन औषधि के रूप में करना चाहती हैं तो स्त्री रोग विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार करें।

गर्म पानी में डालकर न पीयें...

गुनगुने पानी में शहद मिलाकर पीते समय हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि पानी एकदम खौलता हुआ नहीं होना चाहिए और कभी भी शहद को पानी में डालकर उबालें नहीं क्योंकि ये भी विरुद्ध आहार की श्रेणी में आते हैं। इसलिए हमेशा हल्के गुनगुने पानी या सामान्य तापमान वाले पानी के साथ ही शहद का प्रयोग करें।

रतलाम-गौरव नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के भाग्योदय भवन सेवाकेन्द्र द्वारा ग्राम अमलेठा में राष्ट्रीय संत पंडित ललित जी नागर को ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मनोरमा बहन, ब्र.कु. आरती बहन व अन्य।

राजसमंद-राज.। जिला कलेक्टर डॉ. भंवरलाल जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूनम बहन। साथ हैं ब्र.कु. गौरी बहन।

विजयवाड़ा-आ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ यूनिवर्सल पीस रिट्रीट सेंटर पर एनडीआरएफ पर्सनल्स के लिए 'आर्ट ऑफ पॉज़िटिव थिंकिंग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम को ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी ने सम्बोधित किया। इस मौके पर असिस्टेंट कमांडेंट सुमन व ब्र.कु. भाई-बहनों सहित बड़ी संख्या में एनडीआरएफ के जवान मौजूद रहे।

शिवली-कानपुर देहात(उ.प्र.)। अयोध्या में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् उपस्थित हैं समाजसेवी रामू दीक्षित, ब्र.कु. बिमलेश बहन तथा अन्य।

राजगढ़-ब्यावरा(म.प्र.)। पुलिस अधीक्षक धर्मराज मीणा को नव वर्ष की बधाई देने के पश्चात् नव वर्ष का कैलेंडर भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमित्रा बहन व ब्र.कु. दीपिका बहन।

बिलासपुर-छ.ग.। भारत विकास परिषद्,वीरांगना इकाई,बिलासपुर द्वारा प्रख्यात कवियत्री व राजनीतिज्ञ डॉ. सरोजनी नायडू के जन्मदिवस पर आई.एम.ए. भवन में आयोजित कार्यक्रम में अध्यात्म के क्षेत्र में मेडिटेशन द्वारा शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए बिलासपुर टिकरापारा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी को नगर विधायक अमर अग्रवाल की धर्मपत्नी श्रीमती शशि अग्रवाल, वीरांगना इकाई की छत्तीसगढ़ प्रमुख निवेदिता सोम व वीरांगना अध्यक्ष रीता मौर्य द्वारा 'डॉ. सरोजिनी नायडू पुरस्कार- 2024' देकर सम्मानित किया गया। साथ ही इस मौके पर अलग-अलग क्षेत्रों में योगदान देने वाली 15 ओजस्वी महिलाओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में कमिश्नर शिखा राजपूत, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अर्चना झा, वरिष्ठ अधिवक्ता निरूपमा बाजपेयी, प्रिंसिपल सविता तिवारी, कथक डांसर वासंती वैष्णव, सिंगर सुक्ति विश्वास, डॉ. भावना रायजादा, कृषि वैज्ञानिक डॉ. ऊष्मा साव, स्पोर्ट्स वुमेन मिताली घोष, इन्टरप्रेन्योर बिन्दू सिंह कछवाहा, सोशल वर्कर किरण सिंह, हरिभूमि की वरिष्ठ पत्रकार तारिणी शुक्ला एवं कवियत्री शोभा त्रिपाठी सहित शहर की अन्य गणमान्य महिलाएं उपस्थित रहीं।

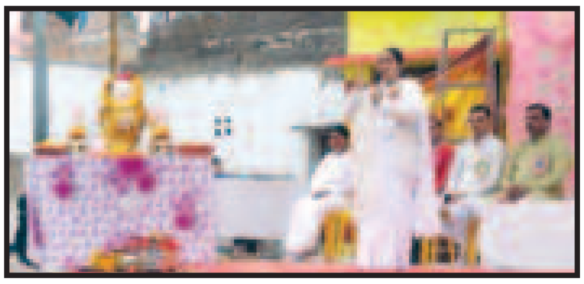

बिजावर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पनागर में महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सरपंच प्रकाश चंद्र चौरसिया, शिक्षा विभाग कम्प्यूटर ऑपरेटर धर्मेंद्र चौरसिया, एसबीआई क्योस्क बैंक संचालक उपेंद्र चौरसिया, शिक्षक अनुराग चौरसिया, अध्यापक बालकिशन चौरसिया, प्राथमिक कन्या शाला अध्यापक राम रतन शर्मा, राजकुमारी चौरसिया, ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. रचना बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित ग्रामवासी उपस्थित रहे।

फर्रुखाबाद-नेहरू रोड कन्नौज(उ.प्र.)। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान मगन जी,अधिशाषी अभियंता को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. लता बहन, ब्र.कु. रमा बहन व ब्र.कु. रीना बहन।

किसी भी बात को बड़ा बनाने के बजाय छोटा बनाकर फिनिश करें

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

बचपन में हमने सुना था कि जैसा कर्म करेंगे वैसा फल मिलेगा। हमारे कर्मों से हमारा भाग्य लिखा जाता है। हमारे पास एक विकल्प ये है कि भगवान भाग्य लिखता है और दूसरा विकल्प कहता है कि मेरे कर्म मेरा भाग्य लिखते हैं। सवाल है कि दोनों में से कौन-सा सही है? दरअसल होता क्या है कि हमने कहीं से सुना, पर उस पर चिंतन नहीं किया कि सृष्टि पर आजकल इतना कुछ हो रहा है तो भगवान हमारे साथ ऐसा क्यों करेंगे? जब भी हमारे जीवन में कोई संकल्प आता है, कोई बात आती है तो हम उसका इल्ज़ाम ऊपर वाले पर डाल देते हैं। अगर हमारे मन मुताबिक काम नहीं होता या अगर वो बात ठीक नहीं होती है तो हम उससे नाराज़ हो जाते हैं। जिस परिस्थिति में हमें भगवान की शक्ति की सबसे ज़्यादा ज़रूर होती है, हम उनसे ही किनारा कर लेते हैं। और कहते हैं ऐसा भगवान हमें चाहिए ही नहीं। क्योंकि हमारे पास एक गलत बिलीफ सिस्टम था कि उसने ये भाग्य लिखा। ऊपर वाले को मैंने इतना बोला ठीक करने के लिए फिर भी उन्होंने हमारी बात नहीं मानी।

एक गलत मान्यता हमारे जीवन जीने का तरीका बदल देती है। आज से ये पक्का करते हैं कि मेरा भाग्य किसने लिखा, अगर मुझे अपने भाग्य में कुछ बदलना है तो मुझे किसके पास जाना है? जब हमें खुद के पास आना है तो परमात्मा का क्या रोल है। अगर मैं अपना भाग्य स्वयं ही लिखता हूँ या लिखती हूँ तो फिर इसमें परमात्मा की क्या भूमिका है? मेरा सवाल है कि आपका आपके बच्चों के भाग्य में क्या रोल है? आप अपने बच्चे को शिक्षा देते हैं कि ऐसा करो, ऐसा नहीं करो मतलब ज्ञान देते हैं। आप अपने बच्चों को शक्ति देते हैं, सहयोग देते हैं और कहते हैं मैं आपके साथ बैठा हूँ। आप अपने बच्चों को प्यार देते हैं लेकिन बच्चों का कर्म कौन करता है? जब वो कर्म करते हैं और उसका परिणाम मिलता है तो क्या आप उस कर्म के परिणाम को अपने बच्चे के जीवन में आने से रोक सकते हैं? नहीं रोक सकते हैं ना। तब भी आप बच्चे को परिणाम का सामना करने का ज्ञान देते हैं, राय देते हैं। उसका सामना करने की शक्ति देते हैं, प्यार देते हैं। लेकिन परिणाम का सामना तो उस बच्चे को ही करना है।

परमात्मा हमें हर कर्म करने का ज्ञान देते हैं। उस कर्म पर चलने की शक्ति देते हैं, हमें प्यार देते हैं लेकिन कर्म तो हमें ही करना है। इसमें दो ही चीज़ें जीवन में सबसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हैं। और वो दो चीज़ें हैं हमारे कर्म और हमारे संस्कार।

बिल्कुल यही रिश्ता हमारा और परमात्मा का है। परमात्मा हमें हर कर्म करने का ज्ञान देते हैं। उस कर्म पर चलने की शक्ति देते हैं, हमें प्यार देते हैं लेकिन कर्म तो हमें ही करना है। इसमें दो ही चीज़ें जीवन में सबसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हैं। और वो दो चीज़ें हैं हमारे कर्म और हमारे संस्कार। क्योंकि संस्कार से ही कर्म बनेगा। हमारे हर कर्म और संस्कार आत्मा में रिकॉर्ड होते जा रहे हैं। आत्मा शरीर छोड़ती है तो नया शरीर लेती है। उस बच्चे को फिर से नर्सरी में जाना पड़ता है। सिर्फ एक चीज़ है जो साथ जाएगी,वो है कर्म और संस्कार। वो आत्मा एक शरीर छोड़ेगी दूसरा शरीर लेगी। छोटा-सा बच्चा पैदा होता है। वो संस्कार अपने साथ लेकर आता है। जिस दिन वो बच्चा पैदा होता है जन्मपत्री भी उसी दिन बन जाती है। वो जन्म पत्री कर्म संस्कार के आधार पर बनती है। उसी क्षण, एक ही हॉस्पिटल में दो बच्चे पैदा होते हैं, ग्रह वही हैं, नक्षत्र भी वही हैं लेकिन दोनों का भाग्य अलग-अलग होता है।

आपमें से जिनके दो बच्चे हैं क्या आपको महसूस होता है कि दो बच्चों के संस्कार बहुत अलग-अलग हैं। कई बार तो जुड़वा बच्चे हैं, दिखने में भी एक समान हैं लेकिन संस्कार और भाग्य बिल्कुल अलग-अलग है। क्योंकि उनके वर्तमान में सबकुछ एक जैसा है। घर वही, परिवार भी वही, स्कूल भी वही, सबकुछ एकदम वही लेकिन उन दोनों का अतीत अलग-अलग है। वो अलग-अलग कर्म और संस्कार लेकर आए हैं। तो यही दो चीज़ें जो अविनाशी हैं। हमेशा हमारे साथ रहेंगी। एक और चीज़ हम पीछे छोड़कर आते हैं, वो सारी बातें जिनको हमने शरीर में रहते हुए बहुत बड़ा बना दिया था। एक सेकंड में वो सारी बातें पीछे छूट जाती हैं। अगर हमें ये याद रहे कि वो आत्मा में रिकॉर्ड हो रही है तो हम किसी भी बात को बड़ा बनाने की बजाय बड़ी बात को छोटा बनाकर फिनिश कर देंगे।

वाराणसी-उ.प्र.। दैनिक जागरण,वाराणसी द्वारा आयोजित विशेष कार्यक्रम 'विमर्श' के दौरान पूर्व मंत्री एवं विधायक सुरेंद्र सिंह पटेल को ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा हो रही व्यापक आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों की जानकारी देते हुए ब्र.कु. विपिन भाई, ब्र.कु. तापोशी बहन एवं ब्र.कु. अनीता बहन।

येवला-महा.। आत्मा मालिक इंग्लिश मीडियम स्कूल में 'व्यसन मुक्ति' विषय पर विद्यार्थियों को सम्बोधित करने के पश्चात् मंचासीन हैं ब्र.कु. संदीप भाई,ज्ञानसरोवर, ब्र.कु. कोमल भाई, माध्यमिक विद्यालय के प्रिंसिपल योगेश सोनवणे, सेमी इंग्लिश मीडियम के प्रिंसिपल राजेश पाटील, जूनियर कॉलेज के प्रिंसिपल राहुल नरोडे, ब्र.कु. नीता बहन तथा ब्र.कु. अनु बहन।

जबलपुर-विजयनगर(म.प्र.)। पी.डी. अंजुमन इस्लामिया गर्ल्स कॉलेज के द्वारा 'एक्ज़ाम फीयर से बचने के उपाय' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. पूजा बहन ने मेमोरी मैनेजमेंट और टाइम मैनेजमेंट के टिप्स देते हुए विद्यार्थियों का मार्गदशन किया। कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. शबाना अंजुम ने भी छात्राओं का मार्गदर्शन करते हुए अपनी शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर कॉलेज की प्राध्यापिकायें अपर्णा तिवारी, रेशमा शेख, सना अली, रशीदा तबस्सुम समेत बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं।

दिल्ली-पीतमपुरा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत विभिन्न स्कूलों सहित गवर्नमेंट गर्ल्स स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. उषा बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन, स्कूल की प्रिंसिपल सविता जून, टीचर्स स्टाफ व स्टूडेंट्स शामिल रहे।

भादरा-राज.। नव वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. चन्द्रकान्ता बहन, व्यापार मण्डल अध्यक्ष चम्पालाल जी, व्यवसायी रमेश अग्रवाल, ब्र.कु. भगवती बहन तथा अन्य।

वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। गणतंत्र दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के पश्चात् सलामी देते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. अरुणा बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। विश्व रेडियो दिवस पर आयोजित परिचर्चा 'रेडियो ज्ञान, जानकारी और शिक्षा की एक सदी' में अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. विमला दीदी। मंचासीन हैं आकाशवाणी जबलपुर के कार्यक्रम उप निदेशक दिनेश नामदेव, कार्यक्रम अधिकारी प्रमोद कार्तिकेय, उद्घोषक चमन सालावार, रेड एफ.एम. के आर.जे. रिकी जी तथा अन्य।

खजुराहो-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बसंत पंचमी के अवसर पर ग्राम राजगढ़ स्थित सवर्गेश्वर मंदिर में आयोजित 'आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी एवं व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी' के उद्घाटन में समाजवादी पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा रजनी यादव, चंद्रनगर बैंक मैनेजर, बमीठा पुलिस स्टाफ, आरडीएस स्कूल के प्रिंसिपल पुष्पेंद्र सिंह सहित समस्त टीचर्स स्टाफ, स्वर्गेश्वर समिति के अध्यक्ष राजेश खैरा, मंदिर के कार्यकर्ता व अन्य गणमान्य लोगों सहित ब्र.कु. विद्या बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

आबू रोड-गांधीनगर(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ सामुदायिक रेडियो मधुबन 107.8 एफ.एम. ने महिलाओं को जागरुक करने के लिए 'कहो, हिंसा को नो' वर्कशॉप का आयोजन किया। जिसमें रेडियो मधुबन के हिंसा को नो की प्रोजेक्ट प्रमुख ब्र.कु. कृष्णा बहन व टीम, निर्भया स्क्वाड सुलोचना जी। साथ ही नगर थाने के कॉन्स्टेबल संतोष जी, हिंसा को नो कार्यक्रम के अन्य सदस्य नीता व पवन भी उपस्थित रहे।

For Online Transfer

Name: OM SHANTI MEDIA OF RERF
Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319
Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, आजीवन - 6000 रुपये
Website: www.omshantimedia.org

परमात्म ऊर्जा

एक बाप से ही योग है तो सहयोग भी एक के ही साथ है। योगी अर्थात् सहयोगी। तो सहयोग से योग को देख सकते हो, योग से सहयोग को देख सकते हो। अगर कोई भी व्यर्थ कर्म में सहयोगी बनते हो तो बाप के सदा सहयोगी हुए? जो पहला-पहला वायदा किया हुआ है उसको सदा स्मृति में रखते हुए हर कर्म करते हो कि भक्तों मुआफिक कहाँ-कहाँ बच्चे भी बाप से ठगी तो नहीं करते हो? भक्तों को कहते हो ना- भक्त ठगत हैं। तो आप लोग भी ठगत तो नहीं बनते हो? अगर तेरे को मेरा समझ काम में लगाते हो तो ठगत हुए ना। कहना एक और करना दूसरा - इसको क्या कहा जाता है? कहते तो यही हो ना कि तन-मन-धन सब तेरा। जब तेरा हो गया फिर आपका उस पर अपना अधिकार कहाँ से आया? जब अधिकार नहीं तो उसको अपनी मन मत से काम में कैसे लगा सकते हो? संकल्प को, समय को, श्वास को, ज्ञान-धन को, स्थूल तन को अगर कोई भी एक खज़ाने को मनमत से व्यर्थ भी गंवाते हो तो ठगत नहीं हुए? जन्म-जन्म के संस्कारों के वश हो जाते हैं। यह कहाँ तक रीति चलती रहेगी? जो बात स्वयं को भी प्रिय नहीं लगती तो सोचना चाहिए- जो मुझे ही प्रिय नहीं लगती वह बाप को प्रिय कैसे लग सकती है? सदा स्नेही के प्रति जो अति प्रिय चीज़ होती है वही दी जाती है। तो अपने आप से पूछो कि कहाँ तक प्रीत की रीति निभाने वाले बने हैं? अपने को सदा हाइएस्ट और होलीएस्ट समझकर चलते हो?

जो हाइएस्ट समझकर चलते हैं उन्हों का एक-एक कर्म, एक-एक बोल इतना ही हाइएस्ट होता है जितना बाप हाइएस्ट अर्थात् ऊंच ते ऊंच है। बाप की महिमा गाते हैं ना- ऊंचा उनका नाम, ऊंचा उनका धाम, ऊंचा काम। तो जो हाइएस्ट है वह भी सदैव अपने ऊंच नाम, ऊंचे धाम और ऊंचे काम में तत्पर हों। कोई भी निचाई का कार्य कर ही नहीं सकते हैं। जैसे महान आत्मा जो बनते हैं वह कभी भी किसी के आगे झुकते नहीं हैं। उनके आगे सभी झुकते हैं तब उसको महान आत्मा कहा जाता है। जो आजकल के ऐसे-ऐसे महान आत्माओं से भी महान, श्रेष्ठ आत्मायें, जो बाप की चुनी हुई आत्मायें हैं, विश्व के राज्य के अधिकारी हैं, बाप के वर्से के अधिकारी हैं, विश्व कल्याणकारी हैं- ऐसी आत्मायें कहाँ भी, कोई भी परिस्थिति में व माया के भिन्न-भिन्न आकर्षण करने वाले रूपों में क्या अपने आप को झुका सकते हैं?

कथा सरिता

गरीबी भी एक मुसीबत बन गयी थी। बच्चा रोये जा रहा था पर आज उसे दूध नहीं मिला था। आज घर में दूध खत्म हो गया था। दोनों इतने बीमार थे कि उठ भी नहीं पा रहे थे। उनकी झोपड़ी भी काफी दूर थी किसी की मदद भी नहीं ले पा रहे थे। गरीब आदमी रोज़ कमाता है और खाता है।

आज बच्चा चुप भी नहीं हो रहा था, भूख से बच्चा लगातार रोये जा रहा था। बहुत हिम्मत करके बच्चे का पिता कुछ काम करने के लिए खड़ा हुआ पर आज तबियत खराब होने की वजह से वह कोई काम नहीं कर पायेगा वो जानता है कि ऐसे काम नहीं चलेगा, अगर काम नहीं है तो खाना भी नहीं है।

ऐसा सोचकर वह काम करने के लिए चल पड़ा, बहुत कोशिश करने पर आज उसे काम नहीं मिला और वह बहुत परेशान हो गया था कि जब ज़रूरत नहीं होती है तो काम मिल ही जाता है परंतु आज बहुत ज़रूरत है तो कोई काम नहीं। ऐसा कब तक चलेगा पता नहीं, भगवान भी हमें भूल गया है।

तभी उसकी नज़र एक आदमी पर गयी, उसके पास बहुत सारा सामान था और वह किसी की तलाश कर रहा था कि कोई उसकी मदद करे उससे भारी सामान उठाया नहीं जा रहा था। वह गरीब आदमी देख रहा था कि वह आदमी बहुत उम्र का लग रहा है और उसके पास जाकर कहा कि मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूँ? आज मुझे कोई काम नहीं मिला है अगर आप मुझे कुछ पैसे देंगे तो मैं इस सामान को ले जा सकता हूँ। उस आदमी ने हाँ कह दी और वह गरीब आदमी उसका सामान लेकर चल पड़ा। उस सामान में कुछ मूर्तियां थी जोकि एक मंदिर के पास ले जानी थी। वह गरीब आदमी बुखार में उन मूर्तियों को पकड़कर ले जा रहा था।

उस आदमी ने पूछा कि मुझे लगता है कि तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है और तुम काम करने के लिए आ गए हो और फिर उस आदमी ने कहा कि आज बच्चे को एक बोतल भी दूध नहीं मिला है और घर में कुछ नहीं है इसलिए मैं काम करके उसके लिए दूध लेकर जाऊंगा। जब तक मैं घर नहीं जाऊँगा तब तक वह रोता रहेगा।

बातों-बातों में मंदिर भी आ गया और उस आदमी ने अपनी जेब से एक पोटली निकाली और कहा कि यह पोटली घर जाकर ही खोलना, आज से तुम्हारे बुरे दिन खत्म हो गए। वह गरीब आदमी कुछ भी समझ नहीं पा रहा था कि यह पोटली... परंतु उसने बात मान ली और घर गया, घर जाकर पोटली खोली तो देखा कि उसमें स्वर्ण मुद्रा है, लगता है यह भगवान है। जो हमारी मदद करने आये थे उस दिन से उनके बुरे दिन खत्म हो गए।

सीख : अगर हम सच्चे मन से भगवान को बुलाते हैं तो वह ज़रूर आते हैं पर आज हम भूल चुके हैं कि हमें हमेशा दूसरों की मदद करनी चाहिए पता नहीं कौन किस तरह और कौन-सी हालत में है इसलिए सबकी मदद करो।

बीदर-रामपुरे कॉलोनी(कर्नाटक)। भारत स्काउट एंड गाइड्स जिला संगठन बीदर एवं शाहीन पब्लिक स्कूल बीदर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित प्रथम कल्याण कर्नाटक जंबो रेट(बृहद सम्मेलन) में ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किया गया। जिसमें मुम्बई से आये ब्र.कु. प्रो. डॉ. ई.वी. गिरीश भाई ने पाँच जिले से आये 3782 स्काउट एंड गाइड्स के बच्चों सहित रोवर्स, रेंजर्स एवं एडल्ट लीडर्स को 'वैल्यूज़ इन एजुकेशन' विषय पर सम्बोधित किया। इस दौरान ब्र.कु. पार्वती बहन सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

रतलाम-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के राजीव गांधी सिविक सेंटर सेवाकेन्द्र द्वारा गणगौरिया ऊंकाला हनुमान मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. मनोरमा बहन को राम मंदिर छाया प्रति एवं शॉल भेंट कर सम्मानित करते हुए रतलाम नगर निगम एम.आई.सी. सदस्य विशाल कुमार शर्मा।

पहाड़ी-डीग(राज.)। ब्रह्मा बाबा के 55वें अव्यक्त स्मृति दिवस पर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् उपस्थित हैं सरपंच संतो देवी, ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. संतोष बहन, ब्र.कु. शिवानी बहन, ब्र.कु. कमलेश बहन व अन्य।

छतरपुर-बक्सवाहा(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'देश का गौरव है नारी' विषय पर आयोजित महिला सम्मेलन में नगर परिषद अध्यक्ष किरण सोनी, समाजसेवी बृज गोपाल सोनी, महेंद्र जैन एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण महिलाओं सहित विश्वनाथ कॉलोनी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमा बहन, ब्र.कु. मोनिका बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

इंदौर-रजनी बाग(म.प्र.)। लक्ष्मी विधवा महिला फाउंडेशन एवं बालाजी सेवा संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु ब्र.कु. भुनेश्वरी बहन को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर लक्ष्मी विधवा फाउंडेशन की राज्य समन्वयक एवं नगर मंत्री पिछड़ा वर्ग मोर्चा भाजपा इंदौर की श्रीमती गीता कुशवाह, बालाजी सेवा संस्थान के डायरेक्टर आर.के. गौड़, इंडेक्स कॉलेज की डायरेक्टर चित्रा खिड़वकर एवं शहर की अन्य गणमान्य महिलायें व प्रतिष्ठित लोग मौजूद रहे।

एसबीएस नगर-नवांशहर(पंजाब)। दोआबा ग्रुप ऑफ कॉलेज के डायरेक्टर राजेश्वर सिंह को ब्रह्माकुमारीज़ के ओमशान्ति मीडिया द्वारा की जा रही सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. राम भाई।

जकातवाडी-सातारा(महा.)। संतोष रोकडे,अधीक्षक,अभियंता सार्वजनिक बांधकाम मंडल को ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शांता बहन।

जो रंग चढ़े, फिर वो न छूटे

प्रतिवर्ष फाल्गुन मास की पूर्णमासी को 'होली' का त्योहार मनाया जाता है। जब पूर्ण चन्द्र आकाश में जगमगा कर पूरी सृष्टि को रोशन कर रहा होता है। अर्थात् जब ज्ञान की पराकाष्ठा हो, सोलह कला से सम्पन्न चंद्र की तरह मानव स्वयं को सत्य ज्ञान और गुणों से सम्पन्न करने के सर्वोच्च पायदान पर हो।

एक बहुत ही पवित्र अर्थ को लिये हुए है 'होली' का त्योहार। इसे जानें, समझें और 'होली' बनकर मनायें। हुल्लड़बाजी को होली का नाम न दें।

अंश भी न बचे, जो वंश बने...

दो दिन के होली त्योहार में प्रथम दिन 'होलिका दहन' किया जाता है। जिसमें लोग अपने घर का कूड़ा-कचरा, गोबर के कंडे आदि व्यर्थ चीज़ों को डालकर जलाते हैं जो बुराइयों और विकारों के प्रतीक हैं। कहीं-कहीं 'होलिका' शब्द का अर्थ - 'भुना हुआ अन्न' भी माना जाता है। होलिका के अवसर पर लोग अग्नि में गेहूँ और जौ की बालियों को भूनते हैं। जिसके पश्चात् वो भुना हुआ बीज आगे उत्पत्ति नहीं कर सकता। उसी प्रकार जब व्यक्ति में ज्ञान की पराकाष्ठा हो जाती है, जब उसे सत्य-असत्य, पाप-पुण्य की समझ मिल जाती है तो सर्वप्रथम वो ईश्वरीय ज्ञान और योग की अग्नि में अपने मन के सभी विकारों, वासनाओं, अवगुणों, बुराइयों का दहन करता है अर्थात् उसे इस हद तक नष्ट कर देता है कि वो दुबारा उसके भीतर न पनप सके।

नये जीवन का हो आरंभ...

कई लोग होलिका दहन को संवत जलाना भी कहते हैं अर्थात् पुराने युग की समाप्ति और नये युग का आरंभ अर्थात् पुराने तमोप्रधान विकारी जीवन की समाप्ति और नये सतोप्रधान निर्विकारी सुंदर जीवन का आरंभ। अर्थात् होली का त्योहार कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम की याद दिलाता है क्योंकि तब ही परमपिता परमात्मा शिव ने अवतरित होकर ज्ञान होली खेली और आत्माओं ने उनके साथ मंगल मिलन मनाया। इसलिए कुछ लकड़ियां और उपले जलाकर हम होली न मान लें बल्कि योगाग्नि में अपने पुराने व बुरे संस्कारों को खत्म करें और अब से श्रेष्ठ कर्म करना शुरू करें।

ईश्वरीय सत्य प्रेम का रंग लगायें

जब हम ज्ञान और गुणों से सम्पन्न होते हैं तो एकअलौकिक आनंद की अनुभूति होनी शुरु हो जाती है, ईश्वर से सर्व सम्बन्ध का अनुभव होने लगता है और उनके सच्चे और असीम प्रेम का रंग आत्मा पर ऐसा चढ़ता है जो कभी छूटता नहीं। जिसके लिए भक्ति में गायन है कि 'ऐसी रंगो चुनरिया कि फिर रंग न छूटे, धोबिया धोये चाहे सारी उमरिया'। ऐसा मानव स्वयं तो उस रंग में रंग ही जाता है किंतु वो जिससे भी मिलता है उसे भी वो उस रंग में रंग देता है। वो सारे गिले-शिकवे, नफरत और बुरी स्मृतियों को भूल सबसे मंगल मिलन मनाता सबके जीवन में सच्चा प्रेम, गुण और सुख लाने का माध्यम बनता है। इसी की याद में इस त्योहार पर एक-दूसरे से मिलकर उन्हें गले लगाते हुए रंग-बिरंगे रंग लगाने की प्रथा चली आ रही है। लेकिन ये केमिकल वाले रंग तो हमारा नुकसान भी कर सकते हैं, हमें गंदा ही करते हैं जिसे फिर रगड़कर छुड़ाना भी पड़ता है जो बहुत ही तकलीफदेह होता है। और रंग लगाने के बहाने लोग गलत कृत्य करने से भी बाज नहीं आते। फिर ऐसा रंग लगाने का क्या औचित्य! रंग तो वो लगे कि सारा जीवन ही रंग जाये अर्थात् सारे दुःखों से दूर ईश्वरीय प्रेम में आनंदमय हो जाये।

मीठे मन, वचन और कर्म की दें मिठास

जब मानव ईश्वरीय प्रेम में रंग जाता है, हर पल आनंद की स्थिति में होता है तो उसके मन, वाणी और कर्म का सारा कड़वापन समाप्त हो जाता है, जीवन में मिठास घुल जाती है। वो फिर जिससे भी मिलता है या जो भी उसके पास आता है उसे उसके मीठे बोल से, उसके मीठे व्यवहार से, मीठे कर्म से सुख-शांति की प्राप्ति होती है और वो भी अपने जीवन की सारी कड़वी यादों और दुःखों को भूल आनंद की अनुभूति करता है। इसी की याद में इस त्योहार पर सभी तरह-तरह के मीठे पकवान, स्वादिष्ट मिठाइयां और सूखे मेवे खाते और एक-दूसरे को खिलाते हैं।

साथ ही इस दिन वैष्णव लोग झूले में श्री कृष्ण की झाँकी सजाते हैं और उसके दर्शन करते हैं। वास्तव में इसका अर्थ है कि जो मनुष्य स्वयं को ज्ञान के रंग में रंगता है और सच्चा वैष्णव(सम्पूर्ण अहिंसक) बनता है, उसकी आँख तो इस कलियुगी दुनिया से हट जाती है और वैकुण्ठ पर ही लगी रहती है। वह स्वयं भी ज्ञान-आनंद के झूले में झूलता है, उसे फिर कोई भी विषय-विकार अपनी ओर नहीं खींचते।

हो-ली के रूप में मनायें होली...

परमात्मा कहते हैं, अपने अंदर के सारे विषय-विकार, घृणा-द्वेष मिटा दो। अब तक आपने जो बुरा किया या आपके साथ जो बुरा हुआ, उन सबको 'हो-ली' अर्थात् समाप्त हो चुकी, ऐसा समझकर ईश्वरीय ज्ञान-योग-प्रेम के रंग में स्वयं को होली(पवित्र) बनाकर फिर होली मनाओ।

रीवा-म.प्र.। दिव्य नगरी निराला नगर के बच्चों के लिए परीक्षा से पूर्व परीक्षा सामग्री वितरण एवं स्नेह मिलन कार्यक्रम में नगर की प्रथम नागरिक श्रीमती अजय गीतांजलि मिश्रा, समाजसेविका एवं दिव्य नगरी निराला नगर प्रोजेक्ट की संरक्षिका श्रीमती संध्या गौतम, ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, चीफ मैनेजर एवं डायरेक्टर दिव्य नगरी परियोजना रीवा प्रबुद्ध नागरिक राजभान पटेल व अन्य गणमान्य नागरिकों व ब्र.कु. भाई-बहनों सहित 100 से अधिक बच्चे व उनके माता-पिता उपस्थित रहे।

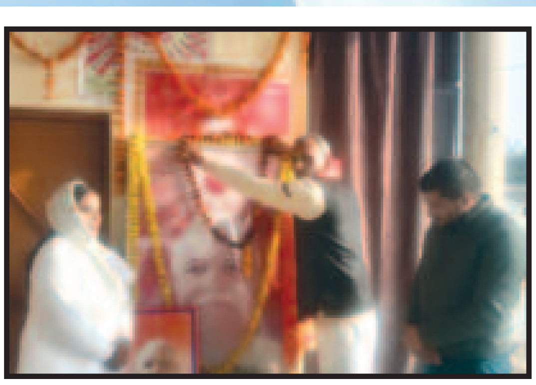

शिवली-कानपुर देहात(उ.प्र.)। पिताश्री ब्रह्मा बाबा के 55वें अव्यक्त स्मृति दिवस पर पुष्पमाला अर्पित करते हुए नगर अध्यक्ष अवधेश कुमार शुक्ला। साथ हैं ब्र.कु. बिमलेश बहन तथा अन्य।

पन्ना-म.प्र.। बसंत पंचमी के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए श्रीमती आरती सिंह,अति.पुलिस अधीक्षक, शैलेंद्र सिंह,सह जिला शारीरिक प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं ब्र.कु. सीता बहन,संचालिका,उप सेवाकेन्द्र,ब्रह्माकुमारीज़।

तुमसर-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'निरोगी भव' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. नितिन मिसुरकर, सेक्रेट्री आईएमए डॉ. संजय भूरे, डॉ. वेणुगोपाल, मनमोहन पचोली, डॉ. मिनल भूरे, वैशाली चोपड़े, डॉ. शालिनी डोंगरे, डॉ. परिणीति फुके, डॉ. जेहरा कुरैशी, अदिति काड़बांधे, शुभांगी ताई मेंडे, मीरा भट्ट,समाज सेविका,विदर्भ क्षेत्र तथा ब्र.कु. शक्ति दीदी।

मुम्बई-मुलुंड। ब्रह्माकुमारीज़ मुलुंड सबज़ोन के ब्रह्माकुमार भाइयों के बीच आंतरिक सम्बंधों में एकता और टीम भावना के निर्माण के उद्देश्य से ज़ोनल हेड राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. गोदावरी दीदी द्वारा माऊली टर्फ,मजीदुन स्कूल,ऐरोली,नवी मुम्बई के पास 'ब्रह्माकुमारीज़ क्रिकेट टूर्नामेंट' का आयोजन किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम में साहिल चौगुले,सामाजिक कार्यकर्ता,युवा संगठन कार्यकर्ता, ममित चौगुले,अध्यक्ष,युवासेना,ठाणे लोकसभा,नवी मुम्बई, ऐरोली सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मीना बहन सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

नर्मदापुरम-म.प्र.। केंद्रीय कारागृह में कैदियों को 'कर्म गति और व्यवहार शुद्धि' विषय पर सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. भगवान भाई,माउण्ट आबू। इस मौके पर स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तुलसा बहन, राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. सुनीता बहन, जेल अधीक्षक संतोष सोलंकी, सहायक जेल अधीक्षक ऋतुराज धांगी, नरेश कुमार सोनी जेल शिक्षक, ब्र.कु. रामावतार भाई, रुपेश भाई आदि उपस्थित रहे।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। विद्या भारती हरियाणा एवं हिंदू शिक्षा समिति के संयुक्त तत्वाधान में गीता कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शिवाली बहन एवं सुनीता मित्तल बहन ने मूल्य शिक्षा के बारे में सभी छात्र-छात्राओं को जागरुक किया। इस दौरान प्राचार्या सुमन बाला तथा सभी शिक्षकगण व स्टाफ मौजूद रहे।

ज़िंदगी बदल देने वाला... वो एक मिनट

एक मिनट, समय का इतना छोटा हिस्सा है कि इसके यूं ही बीत जाने को लेकर कभी कोई चिंता नहीं होती, लेकिन यही एक मिनट जीवन बदल देने का सामर्थ्य रखता है। साल की शुरुआत में यह जानकारी आपकी ज़िंदगी में भी एक नई शुरुआत दे सकती है।

सिर्फ एक मिनट! वक्त का वह हिस्सा, जिसका निवेश आप इस पन्ने को पढ़ने में कर रहे हैं। हो सकता है यह कोई बड़ा सौदा न लगे परंतु हम आपको बता दें कि यह एक बहुत बड़ा सौदा है क्योंकि एक मिनट ही आपके सपनों को साकार करने का शुरुआती बिंदु है। एक महान जीवन सिर्फ एक मिनट से शुरु होता है। इसलिए हमें हर मिनट को सहेजना चाहिए, श्रेष्ठ बनाना चाहिए, और इसका प्रयोग समझदारी से करना चाहिए।

समय तो बढ़ रहा है, क्या आप भी...?

प्रत्येक व्यक्ति को हर दिन में 24 घंटे दिये गये हैं और उसके खाते में 1440 मिनट जमा किये गये हैं। जब ये मिनट खर्च हो जाते हैं तो आप उस दिन में और मिनट नहीं जोड़ सकते। आप थोड़ा-सा भी अतिरिक्त समय नहीं खरीद सकते, चाहे आपके पास कितना ही पैसा हो या आप कितने ही शक्तिशाली हों। समय किसी का इंतज़ार नहीं करता और लगातार आगे बढ़ता रहता है। यह किसी वस्तु या व्यक्ति के लिए नहीं रुकता। इसे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितने धनी हैं या कितने शक्तिशाली हैं या कितने प्रतिष्ठित हैं। समय लगातार आगे बढ़ता रहता है।

हर मिनट कीमती है क्योंकि इसके बदलने में दूसरा मिनट नहीं मिलता। एक बार यह दिन गुज़र जाये तो हम इस बीते हुए समय को बदल नहीं सकते। हर दिन के समय की अपनी एक अलग इकाई होती है और इसे दोबारा नहीं जिया जा सकता। एक बार बीतने के बाद यह खत्म हो जाता है और चला जाता है। इसीलिए हमें इसका उपयोग समझदारी से करना चाहिए। किसी का एक बहुत महत्त्वपूर्ण सूत्र है 'आज मैं जो कर रहा हूँ, वह महत्त्वपूर्ण है क्योंकि मैं इसके बदले में अपने जीवन का एक दिन 'कीमत' दे रहा हूँ। मेरी उपलब्धि महत्त्वपूर्ण होनी चाहिए क्योंकि कीमत बहुत ज़्यादा है।'

अपने मिनटों का करें सर्वश्रेष्ठ उपयोग

हम सबके पास एक दिन में 24 घंटे होते हैं। न एक मिनट ज़्यादा न एक मिनट कम। सफलता की कुंजी यह है कि आप इन मिनटों का क्या कर रहे हैं जो आपको दिये गये हैं? उदाहरण के तौर पर हम सबके पास

24 मालवाहक ट्रक हैं जो हमें हर दिन दिये जाते हैं, आप इन्हें धूल से भरते हैं या फिर हीरों से, यह आपके हाथ में है। बिल गेट्स के पास भी एक दिन में 24 घंटे होते हैं और सफाई करने वाले हमारे मित्र के पास भी।

उन दोनों के बीच अंतर यह है कि वे अपने दिए गए समय का अलग-अलग तरह से उपयोग करते हैं। जब हम बात करते हैं तो सफाई वाला हमारा मित्र हमेशा कहता है 'मैं यह करने जा रहा हूँ, मैं वह करने जा रहा हूँ, मैं अपने जीवन में इससे बड़ा करने जा रहा हूँ।' परंतु वह कभी नहीं करता। अगले दिन वह वहीं लौट आता है और सिक्कों के बदले में सफाई करता है। जबकि उसमें डॉलर कमाने की क्षमता है। वह अपने मिनटों को धूल से भरता है जबकि वह उन्हें हीरों से भर सकता था।

चाहे हम जीवन में कहीं भी हों, हमारे पास चुनने के लिए विकल्प होता है। अपने समय का उपयोग समझदारी से करें।

सचमुच, एक मिनट में चमत्कार होता है

आपको अपनी ज़िंदगी बदलने में कितना समय लगता है। अधिकांश लोग समझते हैं कि इसमें लम्बा समय लगता है, परंतु ये सोच सही नहीं, वास्तव में इसमें सिर्फ एक मिनट लगता है। जिस मिनट आप सचमुच बदलने का फैसला करते हैं और एक अलग दिशा में आगे बढ़ने की चुनौती स्वीकार करते हैं, उसी मिनट आप सचमुच अपनी ज़िंदगी बदल लेते हैं। लम्बा समय तो निर्णय लेने में लगता है। आप अनिश्चय की स्थिति में इधर से उधर भटकते हैं कि आपको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। आप परिवर्तन के मुद्दे पर कश्मकश में होते हैं। कई लोग तो इस बारे में इतने लम्बे समय तक सोचते हैं कि वे 'विश्लेषण के लकवे' से ग्रस्त हो जाते हैं। वे इतने लम्बे समय तक वाद-विवाद करते हैं कि दरअसल कुछ भी नहीं हो पाता। परंतु जिस मिनट आप फैसला करते हैं और कर्म में जुटते हैं, उसी मिनट आप सचमुच अपना जीवन बदलते हैं।

कुंजी यह है कि आप जहाँ भी हैं और जो भी हैं अपने द्वारा चुने गये विकल्पों या न चुने गए विकल्पों के कारण हैं। जीवन को अपने हिसाब से ढालें वरना जीवन आपको अपने हिसाब से ढाल लेगा। या तो आप फैसला करें या तो जीवन आपके लिए फैसला कर देगा। हममें से न जाने कितने लोगों ने निर्णय न लेने का निर्णय लिया है, परंतु इसके बावजूद जीवन आगे बढ़ा है तथा हमारे लिए कोई निर्णय ले लिया है।

जिस मिनट आप निर्णय लेते हैं और उस निर्णय के हिसाब से काम करते हैं, उसी मिनट आप अपनी ज़िंदगी बदल लेते हैं।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मैं जबलपुर से सिल्की हूँ और मैंने दो साल पहले अपनी स्टडी कम्प्लीट की थी। अभी तक मुझे कोई जॉब नहीं मिली है, मुझे जॉब क्यों नहीं मिल रही, इसके लिए मुझे क्या करना होगा कृपया बतायें?

उत्तर : मनुष्य को एक तो ये छोड़ देना चाहिए कि शुरू में उसे वैसे ही मिले जैसी उसकी क्वालिफिकेशन हो या जैसी उसकी एक्सपेक्टेशन्स हैं। ये बात देखिए मनुष्य की कड़ी मेहनत पर भी डिपेंड करता है लेकिन कभी-कभी ऐसा होता है बहुत प्रयास करने के बाद भी नहीं मिलती तो लोग कहीं न कहीं भाग्य को भी इसका रेस्पॉन्सिबल मानते हैं। मैं देखता हूँ कि जिन युवकों की मनोस्थिति बहुत ही अच्छी है। उन्हें फटाफट नौकरी मिल जाती है, और जिनकी मनोस्थिति अच्छी नहीं होती मानो वो परेशान रहते हैं, उनका जीवन अच्छा नहीं गुज़रा है, चरित्र उनका अच्छा नहीं रहा, बुरे संग में रहे थे। एग्ज़ाम उन्होंने पास तो कर लिए लेकिन उस तरह की नॉलेज उनके पास नहीं है। रट लिया था, या कुछ ले-दे के काम कर लिया। जैसे एक बहुत अच्छी चीज़ मुझे सुनने को मिली। किसी ने बीएड का एग्ज़ाम दिया तो जब पेपर आया तो जो एक्सपेक्टेड क्वेश्चन थे वो कोई भी नहीं थे। तो विद्यार्थियों को जो कुछ बताया गया था ना कि ये-ये तैयार कर लो। उसमें से कुछ भी नहीं आया। उसने क्या किया, जो क्वेश्चन पेपर था ना उसको ही बार-बार लिखा और बीच-बीच में दो-चार ज्ञान की बातें लिख दीं। और उसके नम्बर आये 100 में से 88। तो इसको भाग्य कहें, कुछ भी नाम दे दें। ये भी आजकल बहुत होता है। लेकिन मैं एक बात आपको कहूंगा, राजयोग मेडिटेशन आप अवश्य करते होंगे। 21 दिन तक एक घंटा रोज़ बहुत अच्छा एकाग्रता के साथ जिसे हम पॉवरफुल मेडिटेशन कहते हैं वो आप टाइम फिक्स करके रोज़ करेंगी। इसको एक भी दिन मिस नहीं करेंगे।

योग अभ्यास शुरू करने से पहले दो संकल्प करेंगे, कम से कम पाँच-पाँच बार, इसको हम स्वमान कहते हैं, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। तो इससे क्या होगा, एक बार हम याद करेंगे फिर दूसरी बार, तीसरी बार मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। इससे हमारी शक्तियां एक्टिवेट हो जायेंगी, जग जायेंगी। फिर संकल्प किया सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। तो वो सफलता दिलाने में लग जायेंगी। ये फिलॉसफी है इसके पीछे। फिर एक घंटा योग करेंगे तो हमारे संकल्पों में बहुत पॉवर होगी। और हमसे उसी तरह के वायब्रेशन्स चारों ओर फैलने लगेंगे। और वो पहुंचेंगे वहाँ जहाँ से सफलता मिलनी है। उसको प्रभावित करके सफलता दिलायेंगे। ये मैंने बहुत केसेज़ में देखा जिन्होंने ये अभ्यास बहुत अच्छे से 21 दिन कर लिया उनको बहुत अच्छी सर्विस मिल गई। इसके साथ-साथ सवेरे उठते जब आँख खुले सात बार यही संकल्प फिर करेंगे रोज़ मैं मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। सम्पूर्ण आशाओं के साथ, कॉन्फिडेंस के साथ अपनी इस इच्छा को प्रभु अर्पण करते हुए कि तुम मेरे परमपिता हो, तुमको मेरी ये श्रेष्ठ इच्छा अर्पित। मुझको जॉब चाहिए अब आप भी मेरे लिए अच्छा कार्य करें।

बहुत अच्छा मेडिटेशन करेंगे और बहुत अच्छा विज़न बनायेंगे। मान लो इंटरव्यू दिया है, जो भी रिज़ल्ट आपका आना है वो देखेंगे मेरा अपॉइंटमेंट हो गया, अपॉइंटमेंट लेटर हाथ में आ गया। ऐसा एक विज़न बनायेंगे सात दिन तक, तो ऐसी चीज़ें अपनाते हुए यदि बहुत दृढ़ता से आत्म विश्वास के साथ इस कार्य में चलेंगे तो निश्चित रूप से दोनों केसेज में आपको अच्छी जॉब मिल जायेगी। और तैयारी भी अपनी अच्छी करें ये नहीं कि बिना तैयारी हो जायेगा। मुझे जॉब मिलनी ही है, अपॉइंटमेंट लेटर जैसे मेरे हाथ में आ गया है और मैं देखकर बहुत आनंदित हो गया/गयी हूँ। उस आनंद को फील करें कि ये होने जा रहा है बस। तो निश्चित रूप से सफल हो जायेंगे।

प्रश्न : मैं छत्तीसगढ़ से विजयलक्ष्मी साहू हूँ। मेरी बेटी 25 साल की है उसको स्किन प्रॉब्लम है सात साल से। बहुत से स्किन डॉक्टर्स से ट्रीटमेंट भी करवा चुके हैं और रिज़ल्ट कुछ भी नहीं। हम लोग पूरी फैमिली पिछले 6 साल से इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़े हुए हैं, कृपया कुछ सुझाव दें कि क्या किया जाना चाहिए?

उत्तर : स्पिरिचुअल प्रैक्टिस मैं आपको सुझा रहा हूँ। इसका बहुत अच्छा प्रयोग करें। देखिए मेडिकली तो आपने सबकुछ कर ही लिया है। एक तो बहुत अच्छा प्रभाव होता चार्ज वॉटर का। जो हम करा रहे हैं। पानी लें गिलास में उसको दृष्टि देकर सात बार संकल्प करेंगे मैं परम पवित्र आत्मा हूँ... अब ये पानी में पवित्र वायब्रेशन चले गये और ये सबको जानना चाहिए कि पवित्रता के जो वायब्रेशन्स हैं, उसकी जो शक्ति है वो रोगों को ठीक करने में सबसे बड़ी भूमिका निभाती है। तो पानी पवित्र वायब्रेशन्स से चार्ज हो गया। अब आधा गिलास तो आप पी लें और आधा लगा दें जहाँ-जहाँ हैं प्रॉब्लम हैं, पानी ज़्यादा चार्ज कर लें। और अगर मान लो पूरी ही बॉडी में हो गया है तो एक-आधी बाल्टी को चार्ज करके पूरा ही स्नान कर लें। एक तो ये काम आपको करना है। क्योंकि स्किन डिजीज बहुत परेशान करती है। और यंग एज में बुद्धि की जो सारी एकाग्रता है उस तरफ चली जाती है। कहीं खुजली होगी, कहीं इरिटेशन होगा तो ये बहुत बुरी चीज़ है। दूसरा, सोते समय हमें क्या करना है जब हमें नींद आने को हो तो हमारा सब्कॉन्शियस माइंड एक्टिव हो जाता है। तब आप पाँच बार संकल्प कर लें कि मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। मेरी स्किन डिजीज बिल्कुल ठीक हो गई है। मैं स्किन डिजिज से मुक्त हूँ। मैं परफेक्टली हेल्दी हूँ। पाँच बार इस तरह के विचार करते-करते सो जाना है। तो सारी रात में सबकॉन्शियस माइंड हीलिंग का काम करता है। और इस बीमारी का निदान करने में बहुत बड़ी भूमिका निभायेगा। लेकिन जो कुछ भी हमारे साथ होता है कहीं न कहीं पास्ट के कर्मबन्धन से वो जुड़ा रहता है। मेडिकली तो जानते ही हैं कि वर्तमान कारण कहीं ब्लड इम्प्युअर हो गया, कहीं कोई ग्लैंड ठीक से काम नहीं कर रहा, कई कारण होते हैं। इसलिए 21 दिन तक एक घंटा एक अच्छा मेडिटेशन निश्चित कर लें। रोज़ एक घंटे का टाइम फिक्स करके, इस स्वमान के साथ मैं परमपवित्र आत्मा हूँ, और इस देह रूपी प्रकृति की मालिक हूँ अभ्यास करेंगे। इसमें एक अभ्यास और कर लेंगे कि मैं आत्मा यहाँ हूँ। और मुझसे प्युअर एनर्जी, सफेद वायब्रेशन्स ब्रेन में और पूरे शरीर में फैल रहे हैं, जैसे वो सबकुछ अन्दर में क्लीन कर रहे हैं। इसका बहुत ही सुन्दर इफेक्टिव रिज़ल्ट रहेगा।

चौथी चीज़ कि हम सवेरे उठकर उन लोगों से क्षमा-याचना करें जिनको हमने कष्ट दिए हैं पूर्व जन्मों में, या इस जन्म में, सच्चे मन से केवल सात दिन। मैंने गलती से अज्ञान वश, क्रोध वश, अहंकार वश, आप सबको कष्ट पहुंचाया, मैंने रियलाइज़ कर ली अपनी गलती, मैं आप सबसे हाथ जोड़कर क्षमा याचना करता/करती हूँ। इससे वो उनकी जो निगेटिव एनर्जी आ रही है वो नहीं आयेगी। और शारीरिक व्याधियों को ठीक करने में बहुत मदद मिलेगी। और कई ऐसे ज्वलंत उदाहरण माना कई ऐसे पॉवरफुल बीमारियों से मुक्त होने के प्रैक्टिकल उदाहरण हमारे पास हैं। जिनको देखकर हम कंविन्स हो गए कि क्षमा याचना बहुत ही अच्छी चीज़ है। सफलता प्राप्त करने के लिए भी और देह के रोगों से मुक्त करने के लिए भी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

जो कुछ पास्ट हुआ उसे भूला दें...

शक्तिशाली मन का आधार ईश्वरीय ज्ञान और योग

हम मानसिक रोगों के साथ-साथ अन्य रोग जो मनुष्यों को लगे हुए हैं, जो बढ़ते जा रहे हैं, उनकी चर्चा हम करते आ रहे हैं। हमें बहुत ध्यान देना है। मन से हम कमज़ोर न पड़ जायें। बहुत इम्पॉर्टेंट चीज़ है। ऐसा अपने को पॉवरफुल बना लो। और ये मन की स्थिति आयेगी ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग के द्वारा। मनुष्य के सामने परिस्थिति भी आती है। कई मनुष्यों का पास्ट भी बहुत खराब रहा है। कई मनुष्यों को वर्तमान में व्यवहार मधुर नहीं मिल रहा है। सम्बन्धों में कड़वाहट है। और कईयों के प्रियजन जा चुके हैं। कई पश्चाताप करते हैं कि हमारी इस गलती से हमारा व्यक्ति चला गया संसार से। हमें मानसिक रूप से अपने को हेल्दी रखना है। न कहीं किसी का दोष है। ये संसार एक खेल की तरह चल रहा है। मृत्यु एक ऐसा सत्य है जिसको जब जाना है, बहुत लोग हमने देखे एक व्यक्ति अभी-अभी आया ऑफिस से, कहा बेटा पानी देना, पानी पिया और गया। लोग देखते रहे कि ये क्या हो गया! न कोई बीमारी, न कोई परेशानी। हार्ट भी ठीक था। किसी को समझ ही नहीं आया। इसमें किसी को दोष नहीं दिया जा सकता।

अपने मन को पॉवरफुल रखना, इसको कभी भी निराश न होने देना। कुछ चीज़ों को एक्सेप्ट करके ही चलना, पास्ट को भूला देना। राह ढूंढ लेना इसकी परम आवश्यकता है। नॉ डाउट, एक माँ और उसके छोटे बच्चे हों और उसका पति चला जाये तो उनके जीवन में अंधकार छा जाता है। परंतु ये खेल, प्रभु की लीला जो चल रही है इसमें एक रास्ता बंद होता है तो दूसरा खुल जाता है। अपने को सम्भालेंगे तो परिस्थितियां सम्भल जायेंगी। ये स्लोगन आप याद रखेंगे। जो अपने मन को सम्भालना सीख लें, जो अपनी मनोस्थिति को सम्भाल सकें वो ही पॉवरफुल हैं, वो ही भाग्यवान हैं। उनकी परिस्थितियां जल्दी ही सम्भल जाती हैं।

जो समय आ रहा है अगले आठ-दस सालों का, इसमें हर मनुष्य को बहुत कुछ देखना है। ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा जानते हैं प्रभु की प्लैनिंग क्या है आगे की। हम जानते हैं उसे युग बदलना है। इसलिए बहुत कुछ वो होगा जो आपकी कल्पनाओं में नहीं। जिसके बारे में कभी आपने स्वप्न में भी नहीं सोचा उसे एक्सेप्ट करके ही अब आगे बढ़ना है ताकि मानसिक रोग किसी को न हो पायें। ज़्यादा सोचेंगे कि ये क्या हो गया, मैंने ऐसे क्या पाप कर्म किये, हे भगवान तूने मुझे सज़ा क्यों दी? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? ऐसे-ऐसे भी लोग कहते हैं। इसमें भगवान का कोई दोष नहीं। वो तो हमारे लिए रास्ता बना देता है, उससे जुड़ जायें, उसका शुक्रिया करें, नया रास्ता खोल देगा। पास्ट को पूरी तरह भूला देना है। ये पास्ट की याद मानसिक रोगों को बढ़ावा दे रही है। युवकों में तो ये बहुत हो रहा है। अफेयर्स फेल हो रहे हैं, बार-बार याद करते हैं, ये-ये वायदे किए थे, ये-ये उसने वचन दिया था। देखा कितना प्यार था, कैसे धोखा दे दिया मुझे। मैं तो हँसी में कहा करता हूँ लड़कियों को कि जो तुम्हें प्यार कर रहा है वो और दो-चार

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

को भी कर रहा है, ज़रा सम्भल कर रहो। तब तो उनको बुरा लगता है कि मैं क्या कह रहा हूँ। लेकिन जब समस्यायें सामने आती हैं तब उनकी आँख खुलती है कि हमने तो समझा ही नहीं था। क्योंकि इस संसार में ऑनेस्टी तो कहीं नहीं है, लॉयल्टी कहीं नहीं है, वफादारी कहीं नहीं है, धोखा ही धोखा है। इसलिए सोच समझ कर आगे बढ़ें नहीं तो आप मानसिक रोगों के शिकार हो जायेंगे।

मनोवैज्ञानिकों ने जो सर्वे किया उसमें पाया कि संसार के अनेक लोग 70 प्रतिशत पास्ट में जी रहे हैं। कोई कहता है 80 प्रतिशत पास्ट में जी रहे हैं। और सभी लोगों को कोई न कोई पास्ट तंग करता है। लेकिन जब हम ईश्वरीय ज्ञान लेते हैं तो हमें वर्तमान को एन्जॉय करने की ताकत मिल जाती है, हम पास्ट को भूलने लगते हैं। वर्तमान में इतना ईश्वरीय सुख मिलने लगता है, इतना ज़्यादा परमात्म प्यार मिलने लगता है। आप सोचेंगे कि शायद हम गपशप लगा रहे हैं, नहीं, ये सत्य है। भगवान आकर अपने बच्चों को सम्भाल रहे हैं, बल दे रहे हैं, ज्ञान दे रहे हैं, बच्चे ये न सोचो, ये सोचो। जो कुछ पास्ट तुम्हारा बिता है, जो कुछ तुम्हारे साथ हुआ है वो भिन्न-भिन्न कर्मों का ही खेल था, वो पूरा हुआ, आगे बढ़ो। कर्मों का हिसाब किताब चुक्तू हो गया। पास्ट में नहीं रहो, नहीं तो पास्ट की कड़वाहट वर्तमान के सुख से वंचित करेगी और भविष्य को भी कड़वाहट से भरती जायेगी। तो सावधान होकर पास्ट से बाहर आ जायें सभी। युवक भी, बुजुर्ग मातायें भी, और भाई लोग भी।

मैं आप सभी को कहना चाहता हूँ ईश्वरीय ज्ञान लें, स्ट्रेस फ्री लाइफ व्यतीत करें। नहीं तो बढ़ता हुआ स्ट्रेस आपको मानसिक रोगों की ओर धकेल देगा। कोई आपको नहीं बचा सकेगा। हम आपको पहले ही कह चुके हैं। फिर इस समय मनुष्य का मन बहुत कमज़ोर है। वो ज़्यादा प्रेशर सहन नहीं कर सकता, इसलिए अपने घर में प्रेशर का माहौल न बनायें। कई मातायें बच्चों पर बहुत प्रेशर रखती हैं पढ़ाई का। थोड़ा हल्का करें। मैं ये नहीं कह रहा उन्हें अलबेला कर दें, केयरलेस बना दें। केयरफुल भी करें, उनको सावधान भी करें लेकिन प्रेशराइज्ड न करें कभी भी। बच्चे कोमल होते हैं, अगर कोई बात उनके दिमाग को दबा गई, प्रेशर डाल गई तो उनका जो विकास है, बुद्धि का विकास वो रूक जायेगा। बच्चों को जब आप नींद से उठाओ तो तीन बार बुलवाओ मैं बुद्धिमान हूँ, मैं बहुत शक्तिशाली हूँ, मैं स्ट्रेस फ्री हूँ, तीन बातें तीन बार उठते ही, वो आँख मल रहे हों तभी बुलवा दें। सब्कॉन्शियस माइंड उसे स्वीकार करेगा। और बहुत सारी चीज़ें समाप्त हो जायेंगी। तो अपने परिवार में माताओं का काम है, भाइयों का तो है ही। पर माताओं को मैं कह रहा हूँ बहुत खुशी और आनंद का माहौल बनाकर रखें, प्रेशर का नहीं। तो आपके परिवार में मानसिक रोग फटकेंगे नहीं।

वारंगल-तेलंगाना। नवनिर्वाचित पंचायत राज,वुमेन एंड चाइल्ड वेलफेयर स्टेट मिनिस्टर धनश्री अनसुया(सीताक्का) गरु को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. श्रीलता बहन तथा अन्य।

जयपुर-राज.। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जयपुर शहर के दूसरे बड़े टर्मिनल रेलवे-स्टेशन का वर्चुअल रूप से लोकार्पण किया। माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी वर्चुअली शामिल रहे। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित सांसद रामचरण बोहरा एवं अन्य गणमान्य लोगों को स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ इंदिरा गांधी नगर सेवाकेन्द्र की ब्र.कु. नीलम बहन एवं ब्र.कु. सुशीला बहन ने ईश्वरीय सौगात, साहित्य एवं प्रसाद देकर सम्मानित किया।

झज्जर-हरियाणा। गीता जयंती के अवसर पर बाग जवाहरा स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् कैप्टन शक्ति सिंह,आईएएस को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भावना बहन व ब्र.कु. भूप सिंह। साथ हैं पूर्व मंत्री कान्ता देवी, ब्र.कु. हरिशचन्द्र तथा अन्य।

पुणे-महा.। संगीतकार अनु मलिक को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ओमशान्ति मीडिया के संपादक डॉ. ब्र.कु. गंगाधर। साथ हैं डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके तथा ब्र.कु. शारदा बहन।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में आयोजित 'तनाव प्रबंधन' कार्यक्रम में ब्र.कु. सरिता बहन द्वारा सभी डॉक्टर्स को तनाव के मध्य रहते हुए तनाव से दूर रहने के टिप्स दिये गये। कार्यक्रम प्रभारी ब्र.कु. शान्ता दीदी ने सभी का आभार व्यक्त किया एवं सभी डॉक्टर्स को ईश्वरीय साहित्य, ब्लेसिंग कार्ड तथा प्रसाद भेंट किया। इस अवसर पर मुख्य जिला चिकित्साधिकारी डॉ. मंजीत सिंह, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. मुधर कुमार, मुख्य जिला क्षय चिकित्साधिकारी डॉ. प्रवीन कुमार, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. नरेश गोयल, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. एस.के. सिंह, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. आर.एन. सिंह, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. एस.के. अरोड़ा, उपमुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. आलम, इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन के सचिव डॉ. प्रदीप रावत सहित बड़ी संख्या में डॉक्टर्स उपस्थित रहे।

गया-सिविल लाइंस-बिहार। अयोध्या में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

परभणी-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर यौगिक वृक्ष वाटिका के उद्घाटन कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. राजू भाई, पुणे ज़ोन संचालिका ब्र.कु. सुनंदा बहन, राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, चुडावा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रणिता बहन, कोल्हापुर से ब्र.कु. प्रतिभा बहन, ब्र.कु. सोनल बहन सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

खजुराहो-म.प्र.। शिव जयंती के उपलक्ष्य में 'मूल्यनिष्ठ समाज बनाने नई आशाएं हैं लाई शिव जयंती फिर है आई' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. नीरजा बहन, ब्र.कु. रोशनी बहन, खजुराहो थाना प्रभारी वाल्मीकि चौबे, भाजपा महिला मोर्चा निधि सिंह, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता विद्या बघेल, अनीता चंदेल एवं बड़ी संख्या में शहर के लोग व ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

मीरगंज-गोपालगंज(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र के 16वें वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सब इंस्पेक्टर जोगिंदर सिंह, नगर परिषद उपाध्यक्ष धनंजय यादव, डॉ. डी.कुमार, डॉ. ए.के. शर्मा, वार्ड पार्षद सोनू सोनी, ब्र.कु. अंगुर बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. कांति बहन तथा अन्य।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शासकीय अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय छतरपुर में एम.एड. एवं बी.एड. के समस्त प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों के लिए आयोजित 'डिलीट स्ट्रेस, क्रिएट हैप्पीनेस' विषयक कार्यक्रम में मुख्य वक्ता ऑस्ट्रेलिया मेलबर्न से आईं ब्र.कु. अनन्या बहन एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र से ब्र.कु. रीना बहन ने सभी का मार्गदर्शन करते हुए विभिन्न एक्टिविटीज़ कराईं। इस दौरान शिक्षा महाविद्यालय के प्राचार्य एम.के. त्रिपाठी, डॉ. प्रभात साहू, डॉ. प्रमोद सिंह, बीना गुप्ता सहित महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकगण तथा एम.एड. एवं बी.एड. के लगभग 350 प्रशिक्षणार्थी शामिल रहे।

भव्य त्रिविध कार्यक्रम का राज्यमंत्री ने किया उद्घाटन

पाटन-गुज.। कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् राज्य के श्रम रोजगार, प्रवासन और उद्योग कैबिनेट मंत्री बलवंत सिंह राजपूत ने कहा कि आज मुझे इस बात की खुशी है कि 50 वर्ष पूर्व इस सेवाकेन्द्र द्वारा ईश्वरीय सेवाओं की शुभ शुरुआत हुई थी जिसका आज इतना विकास हुआ है। जिसने भी इसमें अपना योगदान दिया है सभी को मैं धन्यवाद देता हूँ। यहाँ व्यसन मुक्ति, तनाव मुक्ति जैसे अनेक समाज सेवा के कार्य किये जाते हैं, जो अति सराहनीय है। इस मौके पर ओआरसी,गुरुग्राम की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ का यह दिव्य दर्शन भवन और मंगल मूर्ति सभागार सभी का मंगल करने वाला, दिव्य गुणों की नई

दिव्य दर्शन भवन सेवाकेन्द्र का गोल्डन जुबली समारोह, मंगलमूर्ति हॉल का उद्घाटन, पाटन से निकले समर्पित 33 बहनें और 2 भाइयों का सम्मान समारोह एवं 80 भाई-बहनों का सिल्वर जुबली कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

खुशबू से भरपूर है। समारोह की मुख्य वक्ता राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी ने कहा कि 'दिव्यता का दर्शन कराने वाले इस नवनिर्मित भवन में पॉज़िटिव वातावरण द्वारा मानवीय मूल्यों का जतन होगा और श्रेष्ठ समाज का निर्माण होगा। ब्रह्माकुमारीज़ युवा प्रभाग की उपाध्यक्षा एवं कार्यक्रम की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिये जाने वाले आत्म ज्ञान, परमात्म ज्ञान से जीवन के हर सवालों का जवाब प्राप्त कर सकते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ मेहसाणा सबज़ोन की संचालिका एवं ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी ने ईश्वरीय सेवाओं के प्रारंभिक काल की बातों को याद कर परमात्म मदद की अनुभूतियों को साझा किया। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीलम दीदी ने परमपिता शिव परमात्मा सहित सभी का हृदय से स्वागत किया। मौके पर प्रेस क्लब प्रमुख राजेश सोनी ने वरिष्ठ राजयोगिनी बहनों को 'रानी की वाव' का मोमेंटो देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में पूर्व कलेक्टर, कमिश्नर पद से सेवानिवृत्त जे.डी. भाड़ साहब, एमएलए डॉ. किरीट पटेल, एचएनजीयू पाटन के वाइस चांसलर रोहित देसाई, भाजपा प्रमुख दशरथ ठाकोर, नगर पालिका प्रमुख हिरल परमार, जगन्नाथ मंदिर के ट्रस्टी पीयूष आचार्य, राम मंदिर के कीर्तीभाई महेता आदि अग्रगण्य नागरिक शामिल रहे। 8000 से अधिक भाई-बहनों ने कार्यक्रम में भाग लिया और शुभकामनाएं दी।

राजयोग से होती हमारी आंतरिक शक्तियां जागृत : डॉ. कार्तिकेयन

हमें स्वयं से जोड़ती है आध्यात्मिकता

आज हमारा ध्यान ज़्यादातर दूसरों पर ही रहता है। जिस कारण हम किसी भी व्यक्ति अथवा परिस्थिति के प्रभाव में आ जाते हैं। दूसरों के प्रभाव में आने के कारण आंतरिक शक्ति कमज़ोर हो जाती है। आध्यात्मिकता हमें स्वयं से जोड़ती है। जितना हम खुद से जुड़ते हैं, उतना ही अपने सामर्थ्य को बढ़ाते हैं - सुप्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी बहन।

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ महिलाओं के द्वारा संचालित विश्व की सबसे बड़ी आध्यात्मिक संस्था है। ब्रह्माकुमारी बहनें आत्मिक सशक्तिकरण पर विशेष बल देती हैं। उक्त विचार सीबीआई के पूर्व निदेशक डॉ. डी.आर. कार्तिकेयन ने ब्रह्माकुमारीज़ के भोराकलां स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में व्यापारियों एवं उद्यमियों के लिए 'व्यवसायियों एवं उद्योगपतियों को चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने के लिए आंतरिक शक्तियों का विकास' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि राजयोग हमें स्वयं की पहचान कराता है। हमारी आंतरिक शक्तियों को जागृत करता है। ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि राजयोग के माध्यम से ही हम स्वयं को सशक्त बना सकते हैं। चुनौतियों को अवसर के रूप में महसूस करने से आंतरिक शक्ति का विकास होता है। संस्थान के व्यापार

एवं उद्योग प्रभाग की उपाध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. योगिनी दीदी ने कहा कि चुनौतियां हमें ताकत देती हैं। चुनौतियों से ही जीवन में निखार

कार्यक्रम में उद्योग जगत की नामचीन हस्तियों सहित 800 से भी अधिक लोगों ने की शिरकत

आता है। कौशल विकास एवं आजीविका के अध्यक्ष हरभजन सिंह ने कहा कि आज अपनी स्वीकृति बनाना सबसे बड़ी चुनौती है। लेकिन सबसे बड़ी बात है, अपनी भूमिका ईमानदारी से निभाना। हरियाणा महिला आयोग की अध्यक्ष रेनू भाटिया ने कहा कि योग के द्वारा उन्होंने कैंसर जैसी बीमारी पर जीत प्राप्त की। फरीदाबाद स्थित सेवाकेंद्रों की निदेशिका ब्र.कु. उषा दीदी ने राजयोग का अभ्यास कराया। ब्र.कु. विधात्री बहन ने ब्रह्माकुमारीज़ के आगामी अभियान की जानकारी दी। एक्सेंचर,गुरुग्राम के मैनेजिंग डायरेक्टर विशाल जैन एवं महावीर इंटरनेशनल इंडिया के निदेशक प्रदीप जैन ने भी विचार रखे।

राज्यपाल ने 'नशा मुक्त भारत अभियान' का शुभारंभ करते हुए कहा...

जिनके अंदर प्रभु का नशा है, उन्हें और किसी नशे की ज़रूरत नहीं

देहरादून-सुभाष नगर (उत्तराखंड)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर 'नशा मुक्त भारत अभियान' का शुभारंभ करने के पश्चात् राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जो लोग नशे का शिकार बन गए हैं, अंधकार की गलियों में हैं, उन्हें रोशनी दिखाना बहुत ज़रूरी है। उत्तराखंड को 2025 तक नशा मुक्त बनाने में ब्रह्माकुमारीज़ के सहयोग से तीव्र गति से परिणाम प्राप्त होंगे। ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि मुझे बहुत खुशी है कि यह परिवार हमेशा ही समाज हित के लिए कार्य करता है और आज भी भारत को नशामुक्त बनाने का ये सुंदर संकल्प लिया है। उन्होंने कहा कि जिनके अंदर प्रभु का नशा है, उन्हें ये आर्टिफिशियल नशे लेने की आवश्यकता नहीं होती। उत्तराखंड को नशा मुक्त बनाना चुनौती तो है, परंतु अगर इच्छा शक्ति, सेल्फ कंट्रोल, सेल्फ डिसिप्लिन का आह्वान करें तो उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त होंगे। जीवन सोच, विचार

इस अवसर पर संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू से आये मेडिकल विंग के सचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह ने नशा मुक्ति अभियान के उद्देश्य एवं लक्ष्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि राजयोगी लाइफस्टाइल अपनाने से नशा मुक्त होने का 97प्रतिशत रिज़ल्ट रहा है। नशा मुक्ति अभियान के तहत 7050 डिस्ट्रिक्ट्स में सेवाएं चल रही हैं। उन्होंने कहा कि यदि छोटे बच्चों को भी इस प्रकार की शिक्षा दी जाए तो वो अपने घरों में, आस-पास सबको सावधान कर समझाएंगे तो उनकी बातों से भी असर होगा।

और धारणा ही तो है। आपकी सोच जो आपने सोचा है और संकल्पों में जो उतारा है इसमें आपको प्रभु की शक्तियों के योगदान से ज़रूर सफलता प्राप्त होगी। देहरादून में ब्रह्माकुमारीज़ सबज़ोन की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी ने शब्दों से सभी का स्वागत किया। राजयोगिनी ब्र.कु. मीना दीदी ने सभी को राजयोग के अभ्यास से गहन शांति व शक्ति की अनुभूति कराई। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. सुशील भाई ने किया।

विकास के लिए मिलजुलकर कार्य करने की सीख मिलती है यहां: मुख्यमंत्री

रायपुर-छ.ग.। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की सराहना करते हुए कहा कि यह बहुत अच्छी परम्परा रही है कि विगत 23 वर्षों से लगातार बजट सत्र के दौरान पक्ष-विपक्ष के समूची विधानसभा को शान्ति सरोवर में बुलाया जाता है और सात्विक भोजन करने का अवसर मिलता है। यह हमें सिखाता है कि न सिर्फ छत्तीसगढ़ बल्कि देश के विकास के लिए हमें ऐसे ही मिलजुलकर कार्य करना है। माननीय मुख्यमंत्री ब्रह्माकुमारीज़ के राजनीतिक सेवा प्रभाग द्वारा विधानसभा रोड स्थित शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री एवं विधानसभा अध्यक्ष सहित मंत्रियों एवं विधायकों के सम्मान समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान छोटे-छोटे विकासखण्ड स्तर तक भी कार्यरत है।

नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री एवं विधानसभा अध्यक्ष सहित मंत्रियों एवं विधायकों का सम्मान समारोह... सभी ने एक मत होकर माउण्ट आबू जाने की दी सहमति...

शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में राजनीतिक सेवा प्रभाग द्वारा हुआ आयोजन...

विशेषकर ग्रामीण और आदिवासी अंचल में महिला सशक्तिकरण का बहुत ही अच्छा कार्य इस संस्थान द्वारा किया जा रहा है। समाज सुधार का कार्य भी यह संस्थान कर रहा है। उन्होंने माउण्ट आबू जाने के लिए अपनी सहमति प्रदान की। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा कि शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में आते ही शान्ति की अनुभूति होती है। सबका मन पवित्र हो जाता है। उन्होंने श्रद्धापूर्वक राजयोगिनी कमला दीदी को याद करते हुए कहा कि उनके प्रयासों से हम सबको एक बार माउण्ट आबू जाने और इस संस्थान से जुड़ने का सौभाग्य मिला। साथ ही उन्होंने एक बार फिर माउण्ट आबू जाने की सहमति दी। नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरण दास महन्त ने कार्यक्रम में बुलाने के लिए ब्र.कु. सविता दीदी का धन्यवाद करते हुए अपनी पार्टी की ओर से माउण्ट आबू जाने की सहमति प्रदान की। रायपुर संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी ने शॉल और मोमेन्टो भेंट कर सभी का सम्मान किया। भिलाई की संचालिका ब्र.कु. आशा दीदी भी उपस्थित रहीं। संचालन धमतरी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता दीदी ने किया।

हेमलता दीदी ने सभी को दिया माउण्ट आबू का निमंत्रण...

ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु.हेमलता दीदी ने सभी का स्वागत किया एवं एक बार पुनः राजयोग शिविर हेतु माउण्ट आबू जाने का निमंत्रण देते हुए कहा कि जीवन में कई बातों से मन में तनाव पैदा होता है जिससे निपटने के लिए मेडिटेशन कारगर उपाय है। इससे आप अच्छी तरह से जनसेवा कर सकेंगे।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 3rd March, 2024
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org